RNI: RJHIN/ 2013/ 53539

शिव आमंत्रण

वर्ष: 5, अंक: 11 | RNI: RJHIN/2013/53539 | सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण | हिन्दी (मासिक), - 2017, नवम्बर, सिरोही, पृष्ठ: 12 , मूल्य : 7.50 रुपए

महा बठुकम्मा फेस्टीवल : ब्रह्माकुमारीज़ ने दिया दिव्य कलाओं से 15 राज्यों से आए 35 हजार लोगों को ईश्वरीय संदेश

एलबी स्टेडियम में गूंजा परमात्मा का संदेश

हैदराबाद में महा बठुकम्मा फेस्टीवल

शिव आमंत्रण, हैदराबाद। हैदराबाद के एलबी स्टेडियम में तेलंगाना सरकार द्वारा बठुकम्मा फेस्टिवल का विशाल आयोजन किया गया। जिसमें करीब 15 प्रदेशों से 35 हजार लोगों ने हिस्सा लिया। इस फेस्टीवल में मुख्य अतिथि के तौर पर तेलंगाना विधान परिषद् के अध्यक्ष स्वामीगौढ़ और सांसद कलवकुंतुला कविता मौजूद रहीं। सबसे खास बात तो यह है कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान शांतिसरोवर हैदराबाद की राजयोग शिक्षिका बहनों ने इसके फेस्टिवल के आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए राजयोग की जानकारी दी। साथ ही संस्थान के ही स्थानीय कलाकारों ने अपनी डिवाईन प्रस्तुतियों से विशाल जनसभा को परमात्मा शिव के अतवरण का संदेश दिया। इसी क्रम में रविन्द्र भारती सभागार में फ्यूजन डांसेस का आयोजन भी किया गया जिसमें कई राज्यों के कलाकारों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया इस कार्यक्रम का शुभारंभ तेलंगाना विधान परिषद् के अध्यक्ष स्वामीगौढ़, तेलंगाना सरकार के वित्तमंत्री एटला राजेंद्र, संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, शांतिसरोवर की निदेशिका बीके कुलदीप ने दीप प्रज्ज्वलन से किया। इस दौरान बीके कुलदीप और बीके मृत्युंजय ने कहा, कि इस प्रकार के आयोजनों से भारतीय संस्कृति का पूरे विश्व में विस्तार होगा। साथ ही अथितियों ने भी अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। करीब चार दिनों तक चले इस महाकुम्भ में देश के पन्द्रह राज्यों से लाखों लोग शामिल हुए।

अंदर पढ़ें .....

मीडिया महासम्मेलन...

...पेज-2

श्वेत समंदर से योग का प्रकम्पन...

...पेज-3

संयमित जीवन से ही ला सकते हैं अनुशासन...

...पेज-11

मनमोहिनीवन काम्प्लेक्स को ग्रीन बिल्डिंग अवार्ड

शिव आमंत्रण ■ आबूरोड

पर्यावरण की दृष्टि से इको फ्रेन्डली, बेहतरीन इलीवेशन, पानी, बिजली के सुरक्षित ब्रह्माकुमारीज संस्था द्वारा निर्मित मनमोहिनी वन तथा आनन्द सरोवर को इंडियन ग्रीन बिल्डिंग काउन्सिल की ओर से ग्रीन बिल्डिंग अवार्ड में प्लेटिनम केटेगरी के तहत सम्मान मिला है। यह अवार्ड जयपुर के एक होटल में आयोजित कार्यक्रम में दिया गया। अवार्ड ब्रह्माकुमारीज के मुख्य अभियन्ता बीके भरत को इंडियन ग्रीन बिल्डिंग काउन्सिल के अध्यक्ष वी सुरेश, इंडियन ग्रीन बिल्डिंग रेसिडेन्सियल सोसायटी के उपाध्यक्ष माला सिंह, आईबीसी जयपुर के अध्यक्ष जैमिनी ओबेराय तथा उपाध्यक्ष आनन्द मिश्रा ने प्रदान किया। ब्रह्माकुमारीज संस्था का मनमोहिनीवन तथा आनन्द सरोवर परिसर में करीब दस हजार से भी ज्यादा पौधे तथा फल फूल वाले वृक्ष लगाये गये हैं। इसके साथ ही बाग बगीचे, पानी, निकास तथा बिजली

ब्रह्मा कुमारीज के मुख्य अभियंता बीके भरत अवार्ड प्राप्त करते हुए।

एवं फायर सेफ्टी की बेहतरीन व्यवस्था है। सात हजार आवासीय इस बिल्डिंग का निर्माण 15 वर्ष पूर्व हुआ था। ब्रह्माकुमारीज पहला आध्यात्मिक संस्थान है जिसके द्वारा निर्मित दो भवनों को इस अवार्ड से नवाजा गया है। उन्होंने उम्मीद जताई कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान लगातार इस क्षेत्र में कार्य करता रहेगा। जिससे पर्यावरण की रक्षा की जा सके।

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद से मुलाकात

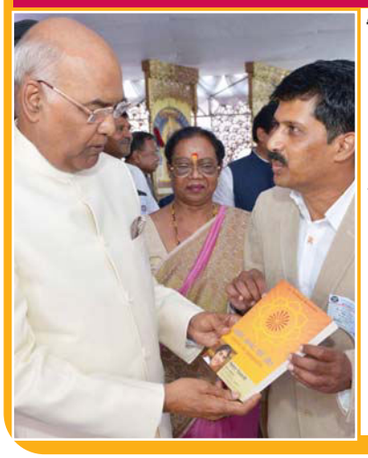

शिव आमंत्रण, अहमदनगर। भारत के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के जन्मदिवस पर बीके दीपक हरके ने उनसे महाराष्ट्र के अहमदनगर में मुलाकात की। उनको जन्मदिन की बधाई देते हुए दीपक हरके ने अन्तर्राष्ट्रीय वक्ता बीके शिवानी की प्रसिद्ध पुस्तक हैप्पीनेस अनलिमिटेड भेंट की। साथ ही संस्थान के मुख्यालय माउंट आबू आने के लिए आमंत्रित किया।

डायबिटीज को करेंगे बाय-बाय : साहू

शिव आमंत्रण, विराटनगर। नेपाल में विराटनगर के जानकी सेवा सदन में अलविदा डायबिटीज विषय पर कार्यक्रम हुआ। मुख्य जिला न्यायधीश विनोद कुमार पोखराल, माउंट आबू से आये मधुमेह रोग विशेषज्ञ बीके डॉ. श्रीमंत साहू, समाज सेवी इंद्रिरा रिजल, क्षेत्रीय निदेशिका बीके गीता एवं नगर के वरिष्ठ सदस्यों समेत अनेक लोग उपस्थित थे। बीके डॉ. श्रीमंत साहू ने डायबिटीज का मुख्य कारण प्रदूषित वातावरण एवं भोजन को बताया और इससे बचने के लिये शाकाहार भोजन, नियमित व्यायाम एवं राजयोग करने की सलाह दी। बीके डॉ. श्रीमंत साहू ने म्यूजिकल एक्सरसाइज कराकर सभी का मनोरंजन किया। बिर्तामोड सेवा समिति एवं लायंस क्लब के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित कार्यक्रम में महापौर ध्रुव कुमार शिवकोटि, कनकई एज्युकेशन फाउंडेशन के संस्थापक जयनारायण धुनगना, लायंस क्लब के अध्यक्ष ओम कृष्णा बिमाली, मारवारी सेवा समिति के अध्यक्ष सुरेश कुमार अग्रवाल, चेम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष कुमार भट्टाराई, रोटरी क्लब के अध्यक्ष विनोद बासनेट, नेपाल डॉक्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. सीपी यादव, समाज सेवी जगदीश मिंडा, मधुमेह रोग विशेषज्ञ बीके डॉ. श्रीमंत साहू मुख्य रूप से मौजूद थे। बीके श्रीमंत साहू ने डायबिटीज से होने वाले रोगों की जानकारी दी एवं बचने के उपाय बताए। क्षेत्रीय संचालिका बीके गीता ने भी विचार व्यक्त किए।

मीडिया महासम्मेलन : कई प्रमुख हस्तियों ने की शिरकत, मीडिया की दशा और दिशा पर मंथन

श्रेष्ठ चिंतन से समाज को सही दिशा दे मीडिया-दीक्षित

शिव आमंत्रण ■ आबूरोड

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के शांतिवन में मीडिया से जुड़े मीडियाकर्मियों के लिए राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सोसायटी आफ मीडिया इनीशियेटिव फार वेल्यूज के राष्ट्रीय संयोजक प्रो. कमल दीक्षित ने कहा कि बारूद के ढेर पर बैठी दुनिया को तबाही से बचाने का दम मीडिया में है । जरूरत इस बात की है कि हम चिन्तन करें और समाज को सही दिशा की ओर ले जाने का नेक नीयती से प्रयास करें। आध्यात्मिक प्रज्ञा एवं राजयोग द्वारा शांति तथा आनंद की प्राप्ति में मीडिया की भूमिका विषय पर आयोजित सम्मेलन में प्रो. दीक्षित ने कहा कि योग व आयुर्वेद तो सदियों पुराने हैं लेकिन बाबा रामदेव के अभियान को जब मीडिया ने जन-जन तक पहुँचाया तो ये हर घर में पहुँच गये। मीडिया विश्व परिवर्तन का पहरूआ बन सकता है यदि ये अपनी शक्ति पहचाने और इसका सदउपयोग करे।

संस्था के महासचिव बीके निर्वैर ने कहा कि दुनिया में नकारात्मकता व हिंसा के बढ़ते प्रभाव का कारण यह है कि अधिकतर लोगों की सोच सकारात्मक नहीं रही मीडिया मात्र सूचना देने तक सीमित न रहकर समाज को सुधारने और लोगों को सही जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करे। प्रभाग के अध्यक्ष ब्र. कु. करूणा ने कहा कि सत्यम शिवम सुन्दरम का बोध कराने वाली ब्रह्माकुमारी संस्था का ज्ञान मीडिया के माध्यम से प्रत्येक मनुष्य तक पहुँचायें और भारत की प्राचीन व समृद्ध संस्कृति को सामने लाते हुए स्वर्णिम भारत बनाने में सहयोग करें ।

संस्था के शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र. कु. मृत्युंजय ने ब्रेकिंग न्यूज को मेकिंग न्यूज में परिवर्तित करने का आव्हान करते हुये कहा कि मीडिया अपराध व प्रदूषण मुक्त समाज की संरचना करने में अहम भूमिका निभा सकता है। इस सम्मेलन में मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके सुशांत, मुख्यालय कोआर्डिनेटर बीके शांतनु, जोनल कोआर्डिनेटर बीके चन्द्रकला समेत कई लोगों ने अपने अपने विचार व्यक्त किये।

सम्मेलन का उद्घाटन करते अतिथि।

नहीं करें मूल्यों से समझौता

मीडिया को निहित स्वार्थों के प्रभाव से बचाने के लिए नैतिक मूल्यों से समझौता नहीं करना चाहिए। सकारात्मक चिन्तन व लेखन के लिए शान्त मन , सन्तुलित सोच व सही दृष्टिकोण अपनाना जरूरी है। **- एमबी जयराम,** मुख्य प्रेरक, पब्लिक रिलेशन्स कौंसिल आफ इंडिया, बैंगलौर

दम तोड़ रही संवेदनाएं

आज मानवीय संवेदनायें तेजी से दम तोड़ रही हैं। इस स्थिति को बदलने पर मीडिया को गम्भीरता से विचार करना चाहिए ।

- राजीव त्यागी, कुलपति, मदरहुड विश्वविद्यालय, रूड़की

स्वयं को भी सशक्त बनाए मीडिया

ब्रहमाकुमारी संस्था विश्व शांति का सन्देश पूर्ण निष्ठा व लगन से प्रसारित कर रही है। मीडिया का धर्म है कि परोक्ष में झांकते हुये स्वंय को सशक्त बनाने का प्रय करे। **- एस. नरेन्द्र,** सूचना सलाहकार, पूर्व प्रधानमंत्री, दिल्ली

पुनर्स्थापित करें विश्वास

विश्व की सबसे पुरानी संस्कृति से जुड़े और सबसे बड़े लोकतन्त्र भारत के मीडिया के सामने विश्वास पुर्नस्थापित करना सबसे बड़ी चुनौती है। समाज के उस वर्ग को जागृत करने की जरूरत है जो मूल्यों से अपनी दूरी निरन्तर बढ़ा रहा है। ब्रह्माकुमारीज संस्था द्वारा आयोजित सम्मेलनों का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए यह जरूरी है। **- अजीत पाठक, अध्यक्ष,** पब्लिक रिलेशन सोसायटी ऑफ इंडिया, दिल्ली

स्प्रीच्युअल कार्निवाल का आयोजन

कार्नीवाल में सबके आकर्षण का केंद्र रही ये कुंभकर्ण की झांकी।

शिव आमंत्रण, चंडीगढ़। स्प्रीच्युअल कार्निवाल का आयोजन चंडीगढ सेक्टर-46 सी सेवाकेंद्र द्वारा आयोजित किया गया। 4 दिन के लिए लगे इस मेले का शुभारंभ पहले दिन मुख्य अतिथि पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट के जज आर. एस. मलिक, सेक्टर-33 ए सेवाकेंद्र प्रभारी बीके उत्तरा, फरीदकोट सेवाकेंद्र प्रभारी बीके प्रेमलता, सेक्टर-44 सी की प्रभारी बीके कविता समेत सेवाकेंद्रों की कई वरिष्ठ बहनों ने कैंडल लाइटिंग कर किया। इसके साथ ही मंच पर उपस्थित लोगों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। मेले में लगी सुंदर झांकियों का जज आर एस मलिक ने अवलोकन किया। जहां उन्होंने 5 युगों के विषय में जानकारी प्राप्त की एवं संस्था की स्थापना से लेकर अभी तक की गतिविधियों को देखते हुए एवं उनसे प्रेरित होकर मेडिटेशन भी किया। मेले के दूसरे दिन पार्षद गुरूप्रीत सिंह ढिल्लो, अखिल भारतीय प्रवासी संगठन के प्रधान अविनाश शर्मा एवं बीके पूनम ने कैंडल लाइटिंग की जहां अतिथियों ने ब्रह्माकुमारीज़ से ये आग्रह किया कि वह प्रतिवर्ष इस प्रकार के मेलों का आयोजन करते रहे।मेले में बच्चों के लिए मूल्य आधारित खेलों का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों को पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति रूझान पैदा करने के दृष्टि से पौधे बांटे गए। इसके साथ ही विज्ञान एवं आध्यात्मिक स्टॉल पर लोगों ने बड़ी उत्सुकता के साथ इसका अवलोकन किया। मेले में नवरात्रों के समापन एवं दशहरा के अवसर पर नौ देवियों की झांकियां, कुंभकर्ण रूपी मानव को जगाने का लाइव शो दिखाया गया। ऐसे ही मेले के मुख्य द्वार पर बनाए गए स्वागत कक्ष में संस्था की स्थापना से लेकर आज तक की गतिविधियों को बखुबी रूप से दर्शाया गया तथा संस्था के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की यादगार शांति स्तंभ को भी सुशोभित किया गया। विद्यार्थियों एवं परिवारों की दैनिक समस्याओं के निवारण हेतु एक परामर्श कक्ष भी मेले में बनाया गया। सुंदर स्वर्णिम दुनिया यानी स्वर्ग की एक सुंदर झलक भी यहां देखने को मिली। संस्था द्वारा दिए जा रहे आत्मा, परमात्मा व सृष्टि चक्र के ज्ञान को भी नई प्रणाली द्वारा मेले में आए लोगों को दर्शाया गया। इन स्टॉलों पर चार दिनों में हजारों लोगों ने इसे देखकर संतुष्टता का अनुभव व स्वयं को परिवर्तन करने का संकल्प किया।

राजस्थान सरकार के नियोजन मंत्री जसवंत सिंह यादव का प्रतिपादन

आध्यात्मिक शिक्षा स्कूलों में लाई जाए

शिव आमंत्रण ■ माउंट आबू

आज भारत के पास बहुत बड़ी युवा शक्ति है। शायद इसी युवा शक्ति को देखकर भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी भारत को डिजीटल इंडिया बनाने की ओर अग्रसर हैं, वहीं दूसरी ओर प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्वविद्यालय भारत को डिवाइन इंडिया बनाने के लिए लगातार प्रयासरत है जिसकी एक झलक संस्थान के मुख्यालय शांतिवन में देखने को मिली। मौका था शिक्षकों के लिए सुख और शान्तिमय जीवन के लिए अध्यात्मिक शिक्षा विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन का। सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त करते हुए राजस्थान सरकार के श्रम, कौशल एवं नियोजन मंत्री जसवंत सिंह यादव ने कहा, आध्यात्मिक विकास ही हमारा लक्ष्य है। आध्यात्मिक शिक्षा स्कूलों में इंप्लिमेंट की जाए तो संसार के सारे कष्ट मिट जायेंगे। परमपिता परमात्मा की डायरेक्शन पर हम चलेंगे तो सही राह मिलेगी और अच्छे समाज का निर्माण होगा।

शिक्षा का उद्देश सिर्फ इंजीनियर, डॉक्टर, वकील बनाना नहीं है, बल्कि व्यक्ति को तनावमुक्त, भयमुक्त, पापमुक्त, ईर्ष्यामुक्त, विकार मुक्त बनाना है तभी भारत डिवाइन इंडिया बन पायेगा और उसके लिए चाहिए ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग ध्यान। जिसके माध्यम से व्यक्ति का मन पापमुक्त और विकारमुक्त बन सकता है। इसी आध्यात्मिक ज्ञान को स्कूल व कॉलेजों में मूल्यनिष्ठ शिक्षा पाठ्यक्रम के रूप में सम्मिलित करने का प्रचार-प्रसार प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्वविद्यालय कई वर्षों से कर रहा है।

आबूरोड में डायमंड हॉल में आयोजित शिक्षा सम्मेलन को संबोधित करते मंत्री जसवंतसिंह यादव व मंचासीन अतिथि।

'सदा खुश व शांतिमय बने रहो'

इस अवसर पर संस्था के महासचिव बीके निर्वैर ने कहा, आध्यात्मिक शिक्षा की ऑटोमेटिक रिजल्ट है सदा खुश, शांतिमय रहना। शांतिमय रहते-रहते आप बाद में शांतिप्रिय बन जायेंगे। शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष बीके मृत्युंजय ने कहा, सर्व पापों से, भय से मुक्त करना यह शिक्षा का उद्देश है। शिक्षा का उद्देश न्यायालय और वकील बनते रहें यह नहीं है। न्यायालय बनाओ लेकिन अन्याय हो रहा है, अंधश्रध्दा बढ़ती जा रही है, अपवित्रता बढ़ रही है, पर्यावरणीय प्रदूषण बढ़ता जा रहा है इसकी ओर हम उतना ध्यान नहीं दे रहे है। शिक्षा का मुख्य उद्देश है मानसिक प्रदुषण से मुक्त करना। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. अनिल दी. सहस्त्रबुद्धे ने कहा, यहां जो सीखा है वह अपने स्कूलों मे सिखाना शुरू कर देंगे तो मेरे ख्याल से दो साल में ही उसके परिणाम दिखने शुरू हो जायेंगे। और देश डेवलप्ड इंडिया होगा, हैप्पी इंडिया होगा जिसकी मुझे पुरी उम्मीद है।

ये रहे मौजूद

कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, महासचिव बीके निर्वैर, राजस्थान सरकार के श्रम, कौशल एवं नियोजन मंत्री जसवंत सिंह यादव, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. अनिल दी. सहस्त्रबुध्दे, शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष बीके मृत्युंजय, राष्ट्रीय संयोजक बीके डॉ. हरीश शुक्ल, मूल्य और अध्यात्मिक शिक्षा कोर्स के निदेशक बीके पांड्यामणि, मुख्यालय संयोजक डॉ. आर.पी. गुप्ता समेत अनेक पदाधिकारीयों ने दीप प्रज्ज्वलन से किया।

उच्च जीवन के लिए व्यंजन की भूमिका

साधना और मनोबल बढ़ाने के लिये प्रसाद की तरह सात्विक भोजन ही स्वीकारिये

भाग-दौड़ वाली आज की जिन्दगी में फास्ट-फूड अनिवार्य बन गया है। इसके तत्कालिक आकर्षणों में अनेकों रोग-दुःख समाये हैं। पिज्जा-बर्गर-पैटिस जैसे डिब्बा बन्द भोजनों के सामने पारम्परिक भारतीय भोजन को लोग पुराने जमाने की चीज समझने लगे हैं। इन्हें ही स्टेटस सिम्बल भी बना लिया है। सामान्य लोग भी इनके उपयोग में गौरव समझते रहते हैं। आकर्षक होने पर भी इनका सेवन करते रहने से शरीर व मन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता ही है।

- बीके रामलखन, शांतिवन

चाय में मांस का अर्क और भोजन में अण्डों की मिलावट भी होने लगी है। यही हमारी सनातन दैवी मान्यताओं के लिये घातक हो रहे हैं। अब तो जेनेटिक फूड कई देशों में बिकने लगे हैं। हमारे देश में भी अप्राकृतिक पेय पदार्थों का बहुत बड़ा धन्धा है। पांच-सात सौ तरह के बोतन बन्द शर्बत-सोस पेय बिकने लगे हैं। ऐसे पेय पदार्थ सजावट व दिखावट के लिये ज़्यादा प्रयोग होते हैं।

पेट की बीमारियां बढ़ाने में इनका विशेष हाथ है। इनसे ही एलर्जी-चर्म रोग जैसी अनेकों बीमारियाँ फैल रही हैं। आत्मा के पवित्र मन्दिर (शरीर) में अपवित्र भोजन कभी नहीं डालिये। डिब्बा बन्द खाद्य-पदार्थों के चटपटे होने के कारण इन पर लोगों की निर्भरता बढ़ती ही जा रही है। इनको सुरक्षित दिखाने के लिये कई तरह के बनावटी रसायन मिलाये जाते हैं। अप्राकृतिक और स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होने से इनमें पोषक तत्व नगण्य होते हैं। अत्यधिक विज्ञापनों के कारण इनसे हर व्यक्ति आकर्षित हो जाता है। स्वास्थ्यप्रद न होने पर भी स्वाद के वशीभूत हो, बहुसंख्यक लोग इनके जाल में फँसते जा रहे हैं। फलस्वरूप ट्यूमर, अल्सर, कैंसर आदि के शिकार हो जाते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य संस्थान इनके परहेज के लिये कहते ही रहते हैं। ताजा न होने से मोटापा बढ़ाते हुए यह दिल का मरीज बना देते हैं। प्राकृतिक आहार सात्विक और सुपाच्य होते हैं। यह रोगों से लड़ने की अपार शक्ति देते हैं। स्वस्थ तन-मन तथा जीवन के लिये शुद्ध अन्न वाली प्राकृतिक जीवन-शैली अपना कर सदा निरोगी रहिये। निर्मल जीवन-शैली से बीमारी के कीटाणुओं के जीवित रहने और बढ़ने का अवसर ही नहीं मिलेगा। छरहरे बदन वाला फुर्तीला व्यक्ति, दोहरे बदन वालों से अधिक प्राणमय होता है।

शरीर के संचालन और आध्यात्मिक उत्थान में भोजन का प्रमुख स्थान है। इसलिये भोजन बनाने के साधन-सामान भी सतोप्रधान वृत्ति की कमाई के होने चाहिये। परमात्मा की याद में बनाकर भोग अवश्य लगाईये। उचित स्थान पर साफ-सुथारे ढंग से ईश्वरीय याद में स्वीकार किया गया भोजन आत्मा में दैवी संस्कार-संकल्प और आभा-मण्डल व भारतीयता तैयार करता है। ऐसी आभामय आत्मा ही भारत को पुनः विश्व-गुरु बनाने में अहम् भूमिका निभायेंगी। मन को पारदर्शी बनाना है तो नैसर्गिक भोजन ही स्वीकार करिये। यदि यौगिक खेती से तैयार सब्जी, अन्न, फल, दूध प्राप्त होने लगें तो कहना ही क्या?

विभिन्न प्रकार की मिठाइयां, नमकीन व भोजन बनाने की विधियां

बूँदी : एक किलोग्राम बेसन के लिये दो किलो शक्कर एवं एक लीटर पानी वाली चासनी को थोड़ा दूध डालकर, साफ करने की विधि से तैयार करें। उसमें एक ग्राम फिटकरी एवं नारंगी रंग भी मिक्स करें। अब चने के बेसन को पानी में इस अनुपात से मिलायें जिससे रबड़ी की भाँति गाढ़ा घोल बन जाये। पुनः उसमें हल्का-सा रंग भी मिला दें। फिर खूब गरम तेल में साँचे से बेसन के घोल को धीरे-धीरे डाला जाये। कढ़ाई में तेल के बुलबुले बनते रहेंगे, जब बुलबुले बन्द हो जायें तो समझ लें कि बूँदी पक गई है, उस स्थिति में उसे तेल से निकाल कर बनी हुई ठण्डी चासनी में ही डालकर भिगो दें। पाँच-सात मिनट पश्चात उसे पुनः अच्छी तरह छानकर अलग पात्र में रख लें, बूँदी अब तैयार है। इसमें इलायची पाउडर, ऐसेंस भी मिला सकते हैं।

हजारों श्वेत वस्त्रों से खचाखच भरे इंदिरा गांधी स्टेडियम सामूहिक ध्यान साधना

श्वेत समंदर से योग का प्रकम्पन

दिल्ली के इंदिरा गांधी स्टेडियम में स्वस्थ एवं सुखी भारत कार्यक्रम में दादी जानकी से आशीर्वाद लेते स्वामी चिदानंद तथा डॉ. एच.आर नागेन्द्र व उपस्थित अपार जन समूह।

शिव आमंत्रण ■ नई दिल्ली

दिल्ली के इंदिरा गांधी स्टेडियम हजारों लोगों द्वारा विश्व शांति एवं एक बेहतर समाज की स्थापना में राजयोग की भूमिका पर मंथन का गवाह बना। यह तब खास हो गया जब राजयोग द्वारा समस्त विश्व को शांति संदेश देने वाली 102 वर्षीय राजयोगिनी दादी जानकी भी शरीक हुई। साथ ही पूरी दुनिया में लाखों लोगों को जीवन जीने की कला सीखाने वाली जीवन प्रबन्धन विशेषज्ञ बीके शिवानी ने भी राजयोग की अग्नि को तीव्र करने की विधा सिखायी। कार्यक्रम में स्वामी विवेकानन्द योग संस्थान के अध्यक्ष योग गुरू डॉ एचआर नागेन्द्र, परमार्थ निकेतन आश्रम हरिद्वार के संस्थापक स्वामी चिदानन्द, भारतीय जनता पार्टी के दिल्ली के अध्यक्ष और सांसद मनोज तिवारी, एमिटी विश्वविद्यालय के अध्यक्ष डॉ सेल्वामूर्ति समेत कई विशिष्ट लोग उपस्थित रहे।

मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने आशिवर्चन देते हुए कहा कि व्यर्थ की बातों का चिंतन मनुष्य की शक्तियों को नष्ट कर देता है। इससे बचने के लिए राजयोग का ध्यान और आध्यात्मिक प्रज्ञा को बढ़ाने की जरूरत है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन ने कहा कि सुखी एवं स्वस्थ समाज की स्थापना के लिए राजयोग के अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि हम एक पिता की संतान है और इसी के नाते सबको मिलकर रहना चाहिए। हिन्दू हो या मुस्लिम सभी को एक परमात्मा को पहचानने का प्रयास करना चाहिए। जीवन प्रबन्धन विशेषज्ञ ने कहा कि यदि हर कोई यह संकल्प ले ले कि अपने श्रेष्ठ कर्मों से सतयुग लाना ही है तो वह निश्चित तौर पर सतयुग लाने में कामयाब हो जायेगा।

प्रधानमंत्री ने दी शुभकामनाएं

योग स्वस्थ रहने का एक नायाब तरीका है एवं स्वस्थ रहने का पासपोर्ट है। ब्रह्माकुमारी संस्था पिछले आठ दशकों से अधिक समय से भारत एवं विश्व के लोगों में आध्यात्मिक ज्ञान एवं योग का प्रसार कर रही है। मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि संस्था द्वारा ''प्राचीन राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी भारत ' विषय पर राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया है। मैं इस विशाल आयोजन हेतु हार्दिक बधाई देता हूँ और इसकी सफलता की कामना करता हूँ।

- नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत

मन पर नियंत्रण ही राजयोग

स्वास्थ्य का मतलब केवल शारीरिक नहीं बल्कि मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य है। यह भौतिकता के ज्ञान भंडार से आगे जाकर प्राण, मन, बुद्धि, संस्कार, चेतनता, भगवान को वास्तविक रूप में जानकर मन पर नियंत्रण करने का नाम ही राजयोग है। **- योगगुरू डॉ एच आर नागेन्द्र,** अध्यक्ष, विवेकानन्द योग संस्थान, दिल्ली

मंत्र में दुनिया बदलने की ताकत

जब तक ओम शांति रहेगा देश बचा रहेगा। ओम शांति के मंत्र में ऐसी ताकत है कि वह व्यक्ति से लेकर देश और दुनिया बदलने की ताकत रखता है।

- स्वामी चिदानन्द सरस्वती, संस्थापक, परमार्थ निकेतन आश्रम, हरिद्वार

अशीर्वाद देता है ऊर्जा

ब्रह्माकुमारीज संस्था के भाई बहनों का प्यार और दादी जी का आशीर्वाद हमेशा उर्जा देने का कार्य करता है। यदि लोग नियमित इसे अभ्यास में लायें तो पूरा जीवन बदल सकता है।

- मनोज तिवारी, अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी, दिल्ली

ये भी रहे उपस्थित

इस कार्यक्रम में महाराष्ट्र तथा आन्ध्र प्रदेश जोन की प्रभारी बीके संतोष, ब्रह्माकुमारीज संस्था के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, ओआरसी की निदेशिका बीके आशा, पंजाब जोन के निदेशक बीके अमीरचन्द, रसिया सेवाकेन्द्रों की प्रभारी बीके चक्रधारी, हरीनगर सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके शुक्ला समेत बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

बीके मृत्युंजय, बीके भरत, बीके कोमल को सृजनश्री सम्मान

आबूरोड। ब्रह्माकुमारीज संस्था के अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन में 14वां अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में देशभर के चुनिन्दा साहित्यकार और चिंतक शामिल हुए। रायपुर की संस्था सृजनगाथा डॉट काम द्वारा आयोजित इस सम्मेलन में ब्रह्माकुमारीज संस्था के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, शांतिवन के अभियन्ता बीके भरत को समाज सेवा में उत्कृष्ट कार्यों के लिए व जनसम्पर्क सेवा के लिए गॉडलीवुड स्टूडियो के पास न्यूज के हेड तथा पीआरओ बीके कोमल को सृजन श्री सम्मान से नवाजा गया। सम्मेलन के दौरान सृजनगाथा डॉट काम संस्था की उपाध्यक्ष रंजना अरगड़े, श्रीमती अरगडे ने विचार व्यक्त किए। हिंदी के प्रचार प्रसार के हिंदी सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं।

अंतरराष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन में सृजनश्री सम्मान प्राप्त करते बीके मृत्युंजय, बीके भरत और बीके कोमल।

परमाणु बम से भी घातक है नकारात्मक सोच बम

सम्पादकीय

आज हम इस बात पर इसलिए चर्चा कर रहे है कि क्योंकि आज पूरा विश्व परमाणु युद्ध के आहट में जी रहा है। जिस तरह से अमेरिका और उत्तर कोरिया के साथ टकराव बढ़ता जा रहा है। निश्चित तौर चिंताजनक है। परन्तु यह स्थिति कहाँ से आयी इसपर भी विचार करने की जरूरत है। ताकि आने वाले भविष्य में इस तरह के विनाशकारी ख्यालात और हालात पैदा ना हों। यदि बारीकी से देखा जाये तो इसको उत्पन्न करने वाला मनुष्य का मन है। विनाशकारी परमाणु बम का सृजन और विनाश दोनो ही मनुष्य मन की देन है। क्योंकि इन दोनो देशों के मुखिया के मन एक ऐसा भाव है जिससे एक दूसरे को सबक सिखाने की होड़ चल रही है। यह होड़ नकारात्मक विचार है। यदि ये नकारात्मक विचार समाप्त हो जाते तो तब तो इस परमाणु उर्जा को विनाशकारी संयत्रों में लगने के बजाए उसे लोगों के कल्याणकारी योजनाओं और विधाओं में लगती। जिससे लोग सुखी और आनन्दमय जीवन व्यतीत करते। इसलिए मनुष्य के जन जीवन को समाप्त करने वाले परमाणु बम का सृजन सबसे पहले मनुष्य के मन से ही तो उत्पन्न हो रहा है। इसलिए हमें एक दूसरे बचने के लिए परमाणु बम से नहीं बल्कि नकारात्मक सोच से बचने की जरूरत है। जिससे मनुष्य अपने मन पर काबू पाये और उसका जीवन सकारात्मक सृजन करने के लिए तैयार हो जाये। राजयोग ध्यान इसमें अच्छी भूमिका निभा सकता है। जिससे मनुष्य अपने मन की चंचलता पर काबू पा सके। अतः आज परमाणु बम से घातक मनुष्य के अन्दर चल रहे नफरत भरे नकारात्मक विचार ज्यादा घातक है। दुनिया के सभी देशों के राष्ट्राध्यक्षों को मिलकर समूचे विश्व में सकारात्मक सोच और व्यवहार के प्रति मुहिम चलानी चाहिए। इससे पूरे विश्व का परिदृश्य ही बदल जायेगा।

क्या हम अपने माइंड की सफाई करते हैं?

Mind Power

बीके शक्ति

सबसे पहले मैं आपको एक बात बताना चाहूंगा कि डब्ल्यूएचओ (वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाईजेशन) की एक रिपोर्ट आई है कि ताली बजाने से कभी भी हार्ड अटैक नहीं होता।तो एक बार बहुत जोरदार ताली बजाइए।

कहते हैं कि चाइना में एक कहावत है। यदि आप श्रेष्ठ कर्म करेंगे तब आपका अगला जन्म भारत में होगा। कितने महान है हम भारतवासी यह हमारा जन्म भारत में हुआ और भारत इतना महान है। भारत बहुत अधिक महान देश है भारत में 70 प्रतिशत किसान बसे हैं। 70 प्रतिशत लोग गांव में बसते हैं और आप बहुत अधिक धनी हैं, बहुत भाग्यवान आत्मा है। यहां आने के लिए बहुत ऊंचे भाग्य की आवश्यकता होती है। जो 70 प्रतिशत किसान हैं, उसमें भी आप कोटी में कोई आत्मा हैं जो परमात्मा ने आपको चुना है। इसलिए आप अपने लिए एक बार जोरदार ताली बजाएंगे। वैसे तो बहुत किसान है लेकिन आप आध्यात्मिक किसान हैं और परमात्मा के घर में हैं। देखा होगा यूं तो आदमी के पास सब कुछ है। सुख-सुविधाओं के लिए जैसे टीवी का सेट, डायमंड का सेट है, और भी बहुत सारी सुख सुविधाएं लेकिन उसका माइंड अपसेट है बाकी सब सेट है। उस व्यक्ति का दिमाग विचारों का विश्व विद्यालय बन चुका है जिसमें अंतहीन महाभारत चलता रहता है, दिन रात महाभारत चलता रहता है, दिन-रात टेंशन है, डिप्रेशन है, माइग्रेन है। स्ट्रेस को दूर करने के लिए हम एक बहुत जबरदस्त टेक्निक का यूज करेंगे । सब अपने अपने स्थान पर खड़े हो जाइए सभी अपने घर में रोज सफाई करते हैं यस और नो? बिल्कुल हम अपने घर के अंदर भी सफाई करते हैं। लेकिन हम अपने घर की सफाई तो कर लेते हैं क्या हम अपने माइंड की सफाई भी करते हैं । तो आज हम अपने माइंड की सफाई करेंगे। वह कैसे करनी है? हमारा मन जो सोचता है वही हमारा मन करता है। माइंड के अंदर इतनी पावर है कि जो हम सोचेंगे वही होगा । तो अब हम क्या करेंगे हम सोचेंगे कि हमारे अंदर बहुत सारे नेगेटिव थॉट्स है । जो समाचार के द्वारा टेलीविजन के द्वारा जो कचरा भरा हुआ है । एक रिपोर्ट आई थी जब बच्चा पैदा होता है तब से 16 साल की उम्र तक इतने नेगेटिव सीन, इतने नेगेटिव थॉट्स उसके दिमाग में आ जाते हैं कि 36 घंटे की डीवीडी फुल बढ़ जाएगी जैसे 50 हजार बार वह मर्डर केस टीवी में देख लेता है 50 हजार बार वह अभद्र चीजें टीवी में देख लेता है।

. . . क्रमश

मानव को देवता बना रही ब्रह्माकुमारीज की शिक्षा

मेरी कलम से

एस.आर. निरंजन, कुलपति, गुलबर्गा विश्वविद्यालय, गुलबर्गा

किसी भी व्यक्ति को अपना मन शांत और प्रभावी रख के उसको समाज के रचनात्मक कार्य में लगाना चाहिए। मुझे आनंद है ब्रह्माकुमारीज यही कार्य कर रही है। ब्रह्माकुमारीज निश्चित रूपसे यह बदलाव लायेगी यह मुझे विश्वास है। सिर्फ आपको वह बताते है वह विचार अपने जीवन मे लाने है और अध्यात्मिक बर्ताव करना है।

समय की पुकार है, जीवन में शांति के लिए अध्यात्मिकता जरूरी है। हम शिक्षा के बारे में बोल रहे है। हजार वर्ष के पहले नालंदा और तक्षशिला विद्यापीठ द्वारा भारत मे गुणात्मक और दर्जात्मक शिक्षा दी जाती थी। हमारे देश मे आज 750 विश्वविद्यालय सेवा दे रही है। उसमे 300 विश्वविद्यालय प्राईवेट है, 300 पब्लिक है और बाकी डीम्ड है। सभी विश्वविद्यालय गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने का हर तरह से प्रयास कर रहे है। लेकिन सिर्फ एक ही विश्व विद्यालय है जो अध्यात्मिक रीति से शिक्षा दे रहा है और वो है ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय। कान्फ्रेन्स में पब्लिक और प्राईवेट सेक्टर से अधिकतर टीचर्स ही है। मेरे प्रिय शिक्षकों, इस देश का नागरिक और देश के टीचर होने के नाते हमारे ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। प्रशासन और शिक्षा इन दो बातों में बहुत अंतर है। हम छात्रों को किस प्रकार की शिक्षा दे रहे है? हम स्लोगन बोलते है, ज्ञान शक्ति है, ज्ञान मनुष्य की तीसरी आँख है। युवाओं को अपना कैरियर बनाने के लिए शिक्षा एक साधन है। शिक्षा व्यक्ति का जीवन परिवर्तन कर देगी, शिक्षा देश का और विश्व का चेहरा ही बदल देगी। शिक्षा के बारे में आज हम ये सब बोलते रहते है। लेकिन किस प्रकार की शिक्षा हम छात्रों को दे रहे है? इसपर सोचने की जरूरत है।

शब्दों में समाया विश्व

मुझे याद है कि 1996 में संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणी गुलबर्गा विश्वविद्यालय में वैल्यु एज्युकेशन कार्यक्रम का उद्घाटन करने आयी थी। गुलबर्गा में ब्रह्माकुमारीज का अमृत सरोवर रीट्रिट सेंटर हजारों लोगों को पवित्र वायब्रेशन से आकर्षित कर रहा है। विश्व विद्यालय को शिक्षाओं के लिए किसी तरह का बंधन नहीं है। उसके शब्द में ही विश्व समाया हुआ है। ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय तो सारे विश्व के लिए है। अध्यात्मिकता के उपर डिग्री और डिप्लोमा देने वाला एकमात्र विश्व विद्यालय है सारे विश्व में और वह है प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय।

ब्रह्माकुमारीज समाज में शांति लाने का प्रयास कर रही है, समाज को एक लाईन में लाने का प्रयास कर रही है। समाज में लौकिक शिक्षा भी नहीं है तो वह घटक समाज के विरूध्द दिशा मे कार्य करेंगे। आप को ठीक करने के लिए कोई कानून या नियम नहीं है। अध्यात्मिकता आदमी को ठीक कर सकती है और हमारे देश में अध्यात्मिकता का बल जबरदस्त है। ब्रह्माकुमारीज आप को जो बता रही है वह आप धारण करो, परिवार को धारण कराओ, आस-पास के पड़ोसियों को भी बताकर उनको भी धारण कराईये। ये बाते आपको स्वर्ग की तरफ ले जायेगी।

यूनिवर्सिटीज बन गईं डिग्रियां देने वाली फैक्ट्रियां

हम बिना कोई लक्ष्य के डिग्रियां दे रहे है। बहुत सारी युनिवर्सिटीज डिग्रियां देने वाली फैक्ट्रीज बन गई है। हमारे पास हायर एज्युकेशन लेने के लिए छात्र आते है लेकिन शिक्षा में कोई लक्ष्य न होने के कारण वह डिप्रेशन में चले जाते है। शिक्षा में एक तो मन की प्राप्ती के लिए कुछ भी नहीं है और दुसरी ओर जो शिक्षा दे रहे है वह टफ है, उसमे वैश्विक स्पर्धा समाई हुई है। जीआरई, इंजिनियरिंग, मेडिकल जैसी परीक्षाओंसे हम छात्रों पर जादा प्रेशर डाल रहे है। माता-पिता उसको अध्यात्मिक शिक्षा के लिए छुट्टी नही दे रहे है। इस हालात में छात्रों के मन में शांति कैसे पैदा होगी? हम ब्रह्माकुमारीज से अनुरोध कर रहे है कि वह हर विश्वविद्यालय में एंट्री करे। छात्रों को अध्यात्मिक शिक्षा देकर उनको शांत जीवन प्रदान करने का बहुत बड़ा रोल ब्रह्माकुमारीज अदा कर सकती है।

डिप्रेशनर का कारण बना मोबाइल फोन

मोबाईल छात्रों को डिप्रेशन की ओर ले जा रहा है। हम छात्रों को कम्प्यूटर या मोबाईल इस्तेमाल करने से रोक नहीं सकते है, लेकिन उनके उपर नियंत्रण रखना होगा। क्या इस्तेमाल करना, क्या नही करना इसकी जानकारी उनको हमें देनी चाहिए। इसको ही काउसिंलिंग कहते है।

तनाव कम करता है पद्मासन

पैरों को सामने की ओर फैलाकर योगा मैट अथवा जमीन पर बैठ जाएँ, रीढ़ की हड्डी सीधी रहे। दाहिने घुटने को मोड़े और बहिनी जांघ पर रख दें, ध्यान रहे की एड़ी उदर के पास हो और पाँव का तलवा ऊपर की ओर हो। अब यहीं प्रक्रिया दूसरे पैर के साथ दोहराएँ।

दोनों पैरों को मोड़े, पाँव विपरीत जांघों पर, हाथों को मुद्रा स्थिति में घुटनो पर रखें।,सिर सीधा व् रीढ़ की हड्डी सीधी रहे। इसी स्थिति में बने रहकर गहरी साँस लेते रहें।

पद्मासन के लिए मुद्रा

मुद्राएं शरीर में ऊर्जा के संचार को बढ़ती है और यदि पद्मासन के साथ किया जाये तो बेहतर परिणम मिलते हैं। हर मुद्रा दूसरी मुद्रा से भिन्न है और उनसे होने वाले लाभ भी। पद्मासन में बैठ हुए चिन मुद्रा व चिन्मयी मुद्रा की स्थिति में रहते हुए, साँस ले व शरीर में ऊर्जा के संचार को महसूस करें।

जो लोग पहली बार पद्मासन कर रहे हैं वो कैसे यह आसन करें? यदि आपको दोनों पैरों को मोड़कर पद्मासन में बैठने में परेशानी है तो आप अर्ध पद्मासन में बैठ सकते हैं, किसी भी पैर को विपरीत जांघ पर रखकर यह आसन कर सकते हैं। पद्मासन करने के लिए शरीर में लचीलापन होना आवश्यक है। जब तक आपके शरीर में लचीलापन न आ जाए, तब तक अर्ध पद्मासन का ही अभ्यास करें।

लाभ-पाचन क्रिया में सहायता करता है।मांशपेशियों के तनाव को कम करता है व् रक्तचाप को नियंत्रित करता है। मन को शांति प्रदान करता है। गर्भवती महिलाओं के प्रसव में सहायता करता है। मासिक चक्र की परेशानी को कम करता है।

यह रखें ध्यान

ऐड़ी व् घुटनों की चोट इस मुद्रा को केवल अनुभवी शिक्षक की देखरेख में ही करें। पद्मासन से पूर्व अर्ध मत्स्येन्दग आसन, बद्ध कोणासन, जानू शीर्षासन व पद्मासन के बाद अधो मुखो स्वानासन किया जा सकता है। योग शरीर व मन का विकास करता है। इसके अनेक शारीरिक और मानसिक लाभ हैं परन्तु इसका उपयोग किसी दवा आदि की जगह नही किया जा सकता यह आवश्यक है की आप यह योगासन किसी प्रशिक्षित श्री श्री योग प्रशिक्षक के निर्देशानुसार ही सीखें और करें। यदि आपको कोई शारीरिक दुविधा है तो योगासन करने से पहले अपने डॉक्टर या किसी भी श्री श्री योगा प्रशिक्षक से अवश्य संपर्क करें। हाथों को बगल में रखते हुए सीधे खड़े हो जाएँ।

दाहिने घुटने को मोड़ते हुए अपने दाहिने पंजे को बाएं जंघा पर रखें। आपके पैर का तलवा जंघा के ऊपर सीधा एवं ऊपर हिस्से से सटा हुआ हो। बाएं पैर को सीधा रखते हुए संतुलन बनाये रखें। अच्छा संतुलन बनाने के बाद गहरी सांस अंदर ले, कृतज्ञता पूर्वक हाथों को सर के ऊपर ले जाएं और नमस्कार की मुद्रा बनाएं।

गीता वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

बीके हरीलाल

आप सभी को पिछले कालम में हमने ऑनलाईन चैनल ओम शांति ॅडलीवुड स्टूडियों चैनल के नाम से हमने आपसे चर्चा की थी। उसे यूटयूब पर आप 24 घंटे देख सकते हैं। परन्तु अभी एक और खुशखबरी है कि हब यह चैनल यूप टीवी (Yupp TV) पर भी कहीं भी कभी भी देख सकते है। यह केवल भारत ही नहीं बल्कि दुनिया के किसी भी कोने में इसे इस सर्विस प्रोवाईडर के जरिये देख सकते है। वास्तव में यह साईट एक सर्विस प्रोवाईडर की हैसियत से काम करती है जिसके जरिये टीवी, एण्डरायड फोन के साथ कई प्लेटफार्म पर देखा जा सकता है। इसकी विस्तृत जानकारी तथा आवश्यक सूचना हम आपको उपलब्ध करा रहे है। जिससे देश और दुनिया में फैले लोगों को सूचित कर सकते है। इसका पूरा नाम इंटरनेट टीवी प्रोवाईडर के साथ दो सौ लाईव चैनल 13 भाषाओं में देखा जा सकता है।

(Yupptv.in Website and Yupptv Mobile App also)

वाचा सेवा में अभिमान आ सकता है, कर्मणा सेवा से अभिमान टूटता है, योगी बनते हैं

दादी जानकी

बाबा की जितनी मीठी बातें सुनते हैं तो सुनने समय जी चाहता है एक बात भी हमको भूले नहीं सब याद रहें। इतनी अच्छी मीठी बातें हैं, सदा के लिए हमको याद रहें। साथ -साथ यह भी जी चाहता है कि सब बातें हमारे जीवन में आ जाएं। कोई भी मिस न हों। एक भी कोई शक्ति कोई परसेन्ट में कम न हो। बाबा को हमारे लिए कितना प्यार है तो हमारे से कुछ भी मिस न हो । सब बातों में समपन्न बन जाएं। तो जितना बाबा की हमारे लिए उम्मीदें है,

आशायें हैं। यह भी बहुत भाग्यशाली हैं जो बाबा ने हमारे लिए उम्मीदें रखी हैं। वैसे भी जैसे बच्चे का माँ बाप पर अधिकार हैं,वैसे माँ बाप का भी अपने बच्चों पर अधिकार होता,दूसरों पर नहीं। अपने बच्चों को ही सिखायेगा, समझायेगा। बाबा ने हमें अपना बनाया है तो बाबा को हक है हमें कहने के लिए। बाबा हमारे ऊपर कुर्बान गया है, हम उस पर गये हैं। हमने जानने पहचानने में टाइम लगाया, उसने धक से अपना बनाया। हम अगर अपना बनाने में टाइम लगाते है तो पीछे पड़ता है। कोई छोड़कर भी चले जाते हैं तो फिर से वह उन्हें कुछ न कुछ अनुभव कराकर अपना बना लेता है। लौकिक में कोई पीछे नहीं पड़ते। बाबा हमारे पीछे पड़ता है क्योंकि जानता है कि उस दुनिया में क्या रखा है। जो मेरे से मिलेगा वह कहीं से नहीं मिलेगा। बच्चा कम बुद्धि वाला है। इसलिए अपना बनाकर रखता है। जैसे हो वैसे हो मेरे होकर रहो। मैं नहीं कहता तुम चले जाओ । मेरा तो काम ही नालायक को लायक, पतितों को पावन बनाना,निर्बल को बलवान बनाना। यह उसका काम है। वह अपना काम करता ही रहता है।

सिर पर हमेशा है छत्रछाया

तो बाबा से इतना प्यार क्यों हुआ है, वह अथक होकर बच्चों को अपने समान बनाता आ रहा है। सदा बाबा ने आदि से आज दिन तक ऐसी हमारे ऊपर नज़र रखी है, बच्ची बाप को देखे, बाप उनको नजर से देखे। जिन्हें नज़र से निहाल कर दिया वो कभी बेहाल हो नही सकते। कैसी भी परिस्थिति आये परेशान हो नही सकतें। जिनके ऊपर बात की नज़र पड़ी, जिसके सिर पर हाथ का है, जिसके सिर पर छत्रछाया है, उसके आगे कोई भी परीक्षा आ जाए ,परिस्थिति आये परेशान हो नहीं सकते । जिनके ऊपर बाप की नजर पड़ी, जिसके सिर पर बाप का हाथ हैं, जिसके सिर पर छत्रछाया हैं,उसके आगे कोई भी परीक्षा आ जाए ,परिस्थिति आ जाए, पहाड़ भी राई बन जाता। कुछ भी नहीं है। वह ऐसे ही हर्षितमुख से खड़ा हो जाता। ऐसी अन्दर से अपनी स्थिति बनाकर रखना, वह है सच्चा पुरूषार्थी। ज्ञान योग हमारे जीवन में नेचरल हो। सोचने में भी ज्ञान हो ,ज्ञान कहता है क्या सोचो,क्या बोलो,सवेरे से रात तक ज्ञान क्या कहता है उसी अनुसार चलो। नेचरल होने से प्रकृति भी साथ देती है। ठण्डी गर्मी भी असर नहीं करेगी। नेचरल ज्ञान को यूज कर रहे हैं। ज्ञान सिर्फ समझने तक नहीं रहा, योग उनके साथ है, संबंध है तो वह शक्ति मिलती है प्रैक्टिकल करने की। सोचना करना समान तभी हो सकता है जब संबंध बाबा के साथ है। संबंध इतना अच्छा है जैसे बाबा ने कहा- हुक्मी हुक्म चला रहा है। हम सिर्फ करने के लिए निमित हैं, साथ लेकर जा रहा है। बाबा के साथ अपने को देखो तो शान्तिधाम के वासी हैं। संगम पर खड़े हो जाओ तो मधुबनवासी हैं। जैसे मधुबन में बाप की तपस्या और चरित्र के वायब्रेशन हैं ऐसे हमारे भी होंगें। अंश भी न हो । सतयुग में सुख होगा,संगमयुग है अतीन्द्रिय सुख में रहने का । उसी सुख का अनुभव हो । बाबा के साथ संबंध है तो अपने आप जी नाचने लगता है।

युक्तियुक्त पार्ट बन जाओ

बाबा के पास अनेक जवाबदारियां होते भी सदा हल्का ,खुशी में नाचता रहता। सवेरे से देखा-सबको सकाश दे रहा है, सब कुछ कर रहा है और दिखा रहा है मैं कुछ नहीं करता। इसमें तो हमें बाबा के समान बनना चाहिए। कभी बाबा ने नहीं कहा मैं करता,वह इनसे कराता है। यह अगर हमारी नेचर बन जाए ,हम कुछ नहीं करते है। रीयली नहीं करते हैं। ड्रामा में नूंधा हुआ है और बाबा करनकरावनहार जानता है,कर रहा है,अनेकों से करा रहा है। हमको कहता है सिर्फतुम ध्यान से युक्तियुक्त पार्ट बजाओ। जो बाप से मिला है वह हमारी लाइफ में हो,यह सिर्फ देखो और किसी का यूज नहीं करो। काफी मत करो, नहीं तो चोर हो जायेंगे। मैं इन जैसा बन जाऊं यह कापी हो गई, बाबा कहता मेरे जैसा बनो। . . . **क्रमश**

आज के युग में मेडिटेशन की आवश्यकता क्यों है?

बीके उषा, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, माउंट आबू

आज के युग में मेडिटेशन की आवश्यक्ता इसलिए है क्योंकि चारों ओर वातावरण में नकारात्मक ऊर्जा व्याप्त है। नकारात्मक ऊर्जा मनुष्य की सकारात्मक ऊर्जा को सोख लेती है। ऐसा लगता है कि मनुष्य की शक्ति निचुड़ गई है, तभी व्यक्ति दिन के ढलने तक स्वयं को एकदम थका हुआ या शक्तिहीन महसूस करता है। जैसे-जैसे नकारात्मक ऊर्जा उसके व्यक्तित्व पर हावी होने लगती है वैसे-वैसे उसका स्वभाव भी नकारात्मक होने लगता है। दूसरी ओर मेडिटेशन करने से वह अपनी सकरात्मक ऊर्जास्तर को बड़ाता जाता है। यह सकारात्मक ऊर्जा ही व्यक्ति का प्रभामंण्डल कहलाती है। आज की दुनिया में यह सकारात्मक ऊर्जा का प्रभामंण्डल मनुष्य के लिए एक सुरक्षा कवच का कार्य करता है। जो व्यक्ति सुबह-सुबह मेडिटेशन के द्वारा अपने आस-पास यह सकारात्मक ऊर्जा का सुरक्षा कवच धारण कर लेता है, वह कैसी भी नकारात्मक ऊर्जा वाले वातावरण में यदि चला भी जाता है तो उस पर उस तमोगुणी वातावरण का प्रभाव नहीं पड़ता। वह दिन भर उमंग-उत्साह वाली सकारात्मक ऊर्जा से कार्य कर सकता हैं। इससे उसकी कार्यक्षमता तो बढ़ती ही है साथ-साथ कोई भी बात या घटना जल्दी तनाव में नहीं लाती, ना ही वह शीघ्र क्रोध में आकर कोई निर्णय लेता है। वह न खुद परेशान होता न किसी को परेशान करने के निमित्त बनता है। दिन के अन्त में भी वह उसी सकारात्मक ऊर्जा के साथ स्वस्थ रहता है यानि उसकी आत्मा रूपी बैटरी चार्जड़ रहती है तभी तो श्रीमद् भगवद्गीता में कहा गया है कि योग से व्यक्ति की कार्य कुशलता बढ़ती है और वह जीवन के हर संघर्ष या युद्ध में विजयी होता है।

मेडिटेशन- एक टैलिपैथिक कनेक्शन meditation is a telepathic connection

सरल शब्दों में मेडिटेशन एक टेलिपैथिक कनेक्शन है जिसमें आप अपने मन की बात दूर बैठे व्यक्ति तक पहुँचा सकते हैं। मान लिजिए आप किसी व्यक्ति को याद कर रहे हो और थोड़ी देर में ही उस व्यक्ति का फोन आ जाता है तो आश्चर्य भी होता है और खुशी भी होती है कि यह कैसे हो गया कि हम मन ही मन याद कर रहे थे और उसका फोन आ गया? उस व्यक्ति से अगर पूछा जाए कि आपने फोन कैसे किया? तो वह यही कहेगा कि बस आपकी याद आ गई तो सोचा आपसे बात कर लूँ। परन्तु यह हमेशा या हरेक व्यक्ति के साथ नहीं होता। ऐसा तभी सम्भव होता है जब उन दो व्यक्तियों की मानसिक तरंगे एक ही स्तर पर प्रवाहित हो रही हों। ऐसा अनुभव स्पष्ट रूप से होता है। इसी को टेलिपैथिक कनेक्शन कहते हैं।

टेलीपैथिक कनेक्शन

पहले के समय में जब ये मोबाइल नहीं थे तब लोग इसी टेलिपैथिक कनेक्शन से एक दूसरे से संदेशों का आदान-प्रदान करते थे। मनुष्यों के मन के संकल्पों में अथाह क्षमता है। लेकिन जैसे-जैसे आधुनिक दुनिया में टेकनोलोजी विकसित होती गई तो मनुष्यों की यह मानसिक शक्ति क्षीण होती गई और वह साधनों के अधीन होता चला गया। आदि शंकराचार्य की बात याद आती है। वजब आदि शंकराचार्य जी बचपन में संन्यास लेना चाहते थे परन्तु उनकी माताजी उन्हें संन्यास लेने से रोक रही थीं। लेकिन माँ की आज्ञा के बिना वह संन्यास धारण नहीं कर सकते थे। एक दिन उनकी माँ नदी पर कपड़े धोने गई, बालक शंकर भी उनके साथ चला गया, जब वह नदी में नहाने लगा उसी समय मगरमच्छ ने उनका पैर पकड़ लिया। वह जोर से चिल्लाया और उसने अपनी माँ को आवाज लगायी और कहा कि देखो माँ तुम मुझे संन्यास नहीं लेने दे रही हो, अब ये मगरमच्छ खा जायेगा, फिर तुम क्या करोगी? माँ का तो मोह था उसने तुरन्त भगवान से प्रार्थना की और कहा, हे प्रभु, मैं उसे संन्यास लेने दूंगी आप उसे बचा लो। तब मगरमच्छ ने उसके पैर को छोड़ दिया। बालक शंकर नदी से बाहर आए और माँ से कहा कि अभी तो आपने भगवान से वादा किया है कि आप मुझे संन्यास लेने दोगी। माँ ने कहा ठीक है, मैं लेकिन मेरी एक शर्त है कि जब मैं मरूं तो तेरे कंधे पर जाऊं। बालक शंकर ने माँ से, कहा ठीक है, जब आपका अन्तिम समय आये तो आप सिर्फ मुझे याद करना, मैं पहुँच जाऊँगा। बालक शंकर माँ का आशीर्वाद लेकर निकल पड़े। काफी सालों के बाद एक दिन जब वह तपस्या में बैठे थे कि माँ की याद आयी और महसूस हुआ जैसे उनका अंतिम समय आ गया है, और वह उनको याद कर रही है। . . . **क्रमश**

जीवन के अंतिम पड़ाव तक नैतिक मूल्यों की आवश्यकता

शिव आमंत्रण ■ अंबिकापुर

आज पृथ्वी पर जितने भी प्राणीमात्र हैं उनमें मानव की बौद्धिक क्षमता और विचार करने की शक्ति उसे सभी से श्रेष्ठ बनाती है और एक श्रेष्ठ समाज के निर्माण के लिए हम सभी को अपने जीवन को नैतिक मूल्यों से सजाना होगा। उक्त विचार छत्तीसगढ़ विधानसभा के प्रतिपक्ष नेता टी एस सिंहदेव के हैं जो उन्होंने छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर सेवाकेंद्र द्वारा नए सेवाकेंद्र के उद्घाटन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किए। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा, कि विद्यार्थी जीवन से लेकर जीवन के अंतिम पड़ाव तक नैतिक मूल्यों की आवश्यकता होती है।

अध्यात्म से बनें सशक्त

बदलते समाज में आध्यात्मिकता का समावेश विषय पर आयोजित इस सम्मेलन में अंबिकापुर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके विद्या ने सभी को एक मूल्यनिष्ठ एवं प्रेमपूर्ण समाज के लिए संकल्पबद्ध कराते हुए बताया, कि आध्यात्म द्वारा सशक्त होकर विकट परिस्थिति में भी समन्वय बना सकते है। इस दौरान नगरपालिका निगम के डिप्टी मेयर अजय अग्रवाल एवं सीतापुर जनपद पंचायत के उपाध्यक्ष शैलेष सिंह, पूर्व सिविल सर्जन डॉ. सुषमा सिन्हा ने भी नए सेवाकेंद्र के शुभारंभ के लिए अपनी बधाईयां एवं शुभकामनाएं दी। अंत में संस्था से जुड़े लोगों ने राजयोग शिविर से लाभ लेने की अपील की व अतिथियों को ईश्वरीय सौगात भेंट की।

दीप प्रज्ज्वलन करते हुए बीके मंजू, टी. एस. सिंगदेव, बीके विद्या, अजय अग्रवाल आदि।

घुटनें बचाने है तो रोज व्यायाम करो : डॉ. मलाल

शिव आमंत्रण, उल्हासनगर। महाराष्ट्र के उल्हासनगर सेवाकेंद्र और डॉ. कौशल मलाल के निर्देशन में घुटनों की पूरी जानकारी देने के लिए सेमीनार का आयोजन किया गया। फोर्टीज हॉस्पिटल के ऑर्थोपेडिक सर्जन व सीनियर कन्सल्टेंट डॉ. कौशल मलाल और डॉ. अविनाश चौथावे ने बताया कि अगर हमें घुटनों की रिप्लेसमेंट से बचना है तो रोज व्यायाम करना है और अपने शरीर में विटामिन डी और कैल्शियम की सही मात्रा बनाए रखनी है। इस कार्यक्रम का लाभ अधिक से अधिक लोगों ने लिया।

राष्ट्रीय समाचार

अंतर्राष्ट्रीय बौद्धिस्ट कॉन्फ्रेंस में दिया परमात्म संदेश

शिव आमंत्रण, गांधीनगर। गुजरात की कैपिटल गांधीनगर के महात्मा मन्दिर के ओडिटोरियम में आयोजित द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस ऑफ बौद्धिस्ट हेरिटेज इन गुजरात में ब्रह्माकुमारीज़ को भी सादर निमंत्रण दिया गया था । जिसमें गांधीनगर, सेक्टर-28, सेवाकेन्द्र संचालिका बीके कैलाश की अगवानी में बीके मेघा, बीके रानी, गुजरात सरकार में नोन रेसीडेन्ट इन्डियन विभाग में उपसचिव की हैसियत से अपनी सेवा दे रहे बीके हरीश गोहिल आदि बीके डेलिगेशन भी इस कॉन्फ्रेंस में बाबा का संदेश देने हेतु खास उपस्थित हुए। बीके कैलाश ने कार्यक्रम के सेक्रेटरी जनरल, प्रेसिडेन्ट अशोका मिशन, वाइस प्रेसिडेन्ट महाबोद्धी सोसायटी ऑफ इंडिया, वाइस प्रेसीडेन्ट वर्ल्ड फेलोशीप ऑफ बुद्धिस्ट एवं वाइस प्रेसिडेंट ऑफ वर्ल्ड बुद्धिस्ट संघ काउन्सिल- बौद्धी लामा लोबझांग के साथ भेंट करके उन्हें परमात्म अवतरण का सन्देश दिया तथा ब्रह्माकुमारी संस्थान की सेवाओं से अवगत कराया। उन्हें लोकल सेंटर एवं संस्था के वैश्विक हेड क्वार्टर माउन्ट आबु आने का ईश्वरीय निमंत्रण भी दिया गया। उनके साथ गांधीनगर संघकाया फाउन्डेशन के मेडिटेशन प्रशिक्षक भल्टे प्रशिल र जी भी ज्ञान चर्चा में शामिल हुए। कार्यक्रम में शामिल प्रिन्स ऑफ कोलम्बिया एवं मिसेस कोलम्बिया से भी बीके कैलाश की ज्ञानचर्चा हुई। मिसेस कोलम्बिया ने बीके बहनों से गले मिल कर ईश्वरीय प्रेम, शक्ति की अनुभूति की।

बौद्धी लामा लोबझांग को परमात्म सन्देश देते बीके भाई-बहनें।

बीआईएसएफ जवानों के लिए तनाव प्रबंधन

शिव आमंत्रण, राजौरी। जम्मू एण्ड कश्मीर के राजौरी सेवाकेंद्र द्वारा बीआईएसएफ यूनिट 163 बटालियन में दो दिवसीय तनाव प्रबंधन विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसके उद्घाटन अवसर पर सीओ बी.एन. प्रधान, बीके बीना और राजौरी सेवाकेंद्र से बीके निर्मल मुख्य रूप से उपस्थित थे। बीके राजसिंह ने तनाव प्रबंधन पर चर्चा की और फरीदाबाद सेक्टर 21डी सेवाकेंद्र की बीके पूनम ने आर्ट ऑफ पॉजीटिव थिंकिंग विषय पर प्रकाश डाला। डॉ. दिनेश ने होलिस्टिक हेल्थ के बारे में बताते हुए योगा एक्सरसाइज कराया। अंत में डिआईजी मथुकर ने बीके बहनों को मोमेंटो भेंटकर सम्मानित किया वहीं बहनों ने उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट की। इसके साथ ही सुंदरबानी में बीएसएफ यूनिट के 126 बटालियन में भी जवानों के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें डीआईजी इंद्रराज सिंह, सुंदरबानी सेवाकेंद्र संचालिका बीके राजकुमारी, मुंबई से आयी बीके रीतू, फरीदाबाद से आयी बीके पूनम, शालिवन से आए बीके राज सहित अन्य सदस्यों ने दीप प्रज्ज्वलन से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। सीओ राजीव कुमार ने पूरे कार्यक्रम को सराहा।

राजौरी बीएसएफ के डिआईजी मथुकर द्वारा प्रशस्तिपत्र स्वीकार करते बीके पूनम, बीके निर्मल और डॉ. दिनेश।

बागलकोट में विविध स्पर्धाएं आयोजित

म्यूजिकल चेयर कॉम्पिटीशन में सहभागी वरिष्ठ नागरिक।

शिव आमंत्रण, बागलकोट। कर्नाटक के बागलकोट में अंतरराष्ट्रीय वृद्ध दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में इस अवसर पर डांस, मोनो एक्टिंग, फैंसी ड्रेस, संगीत कुर्सी एवं नींबू दौड़ और सिगिंग कॉम्पीटीशन आदि मनोरंजक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। जिसमें उपस्थित वृद्धजनों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया एवं अपनी कला का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में सीनीयर एग्युकेशन जइइंट डायरेक्टर बलगानूर, सीनीयर एग्रीकल्चर डायरेक्टर राजचंद्र कटागेरी, चिटनरी डॉक्टर टी. आई. लमानी, समाजसेवी सिद्दलिंगपनावर, बीके पदमा, बीके सरोज एवं बीके नगर । सहित अन्य बड़ी संख्या में वरिष्ठ लोग उपस्थित थे।

राजयोग द्वारा सुख-शांति : 80 वीं वर्षगाठ के उपलक्ष्य में राज्यपाल डॉ. पाल के विचार

भारतीय संस्कृति रहेगी चिरंतन

कार्यक्रम को सबोधित करते राज्यपाल केके पाल।

देहरादून मुख्य शाखा सुभाष नगर के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागी।

शिव आमंत्रण ■ देहरादून

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय देहरादून की मुख्य शाखा सुभाष नगर के सभागार में ब्रह्माकुमारीज़ के 80 वीं वर्षगाठ के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम राजयोग द्वारा सुख शान्ति विषय पर बोलते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राज्यपाल डॉ. के.के. पाल ने कहा कि जिनके पास खुशी है, उनके पास सब कुछ है। खुशी मिलती है, हमारे गुणों द्वारा। जिस व्यक्ति के अन्दर जितने अधिक दिव्य गुण होगें उतना वह खुश रह सकता है। क्योंकि खुशी हमारे अन्दर छिपी हुई है। भारतीय संस्कृति सबसे पुरानी संस्कृति है। बाकी संस्कृतियाँ आई और विलुप्त हो गई। भारतीय संस्कृति का अस्तित्व आज भी है और आगे भी रहेगा।

ख़त्म नहीं होती बेसिक वेल्यूज़

हमारी बेसिक वैल्यूज कभी खत्म नहीं होती है कम हो जाती है। मनुष्य जैसा सोचता है उसके कर्म भी वैसे ही बनते है और उन कर्मों से ही मनुष्य का चरित्र बनता है। चरित्र बनाने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्था का महत्वपूर्ण योगदान है। मैं ब्रह्माकुमारी संस्था के सुन्दर भविष्य की कामना करता हूं।

पंजाब जोन के निदेशक बीके अमीरचंद ने कहा कि 80 वर्षों के सफर में ब्रह्माकुमारी संस्था ने लाखों करोड़ो मनुष्यों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाया है। क्योंकि हमारी सोच तभी ठीक रह सकती है जब हमारा सम्बन्ध परमपिता परमात्मा के साथ जुड़े। क्योंकि परमात्मा सर्व गुणों और शक्तियों के सागर है उनसे जुड़ने से हमारे जीवन में सुख शान्ति की अनुभूति होती है। इसे ही राजयोग कहा जाता है। गुरूग्राम के ओम शांति रिट्रीट सेंटर की निदेशिका बीके आशा ने कहा, कि मनुष्य यह तो समझ चुका है कि चीजों में चिरस्थाई सुख नहीं है। मनुष्य अपने जीवन में सुख-शान्ति की चाहना रखता है परन्तु उसे इसकी गहराई का बोध अथवा अनुभव नहीं है क्योंकि ये तो मनुष्य के अपने निजी खजाने है। आवश्यकता है राजयोग के अभ्यास द्वारा उनको सुजाग करने की । ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा सिखाया जाने वाला राजयोग सुख शान्ति का पासवर्ड है। बीके मंजु ने सभी का आभार व्यक्त किया। मंच का संचालन बीके सुशील ने किया । इस अवसर पर अमरनाथ गोंदवाल, जे. एस. रावत, सुरेन्द्र बिष्ठ, विजय रस्तोगी, राजकुमार जोशी, मनोज रावत, अनुप गुत्ता, हिमांशु आर्या, माला गुरूंग, बबीता चौधरी, संगीता वर्मा, मानसी गुसाई, रेनू रावत, बबीता भण्डारी, जसबीर कपूर, उषा कपूर मुस्कान कपूर इत्यादि उपस्थित थे।

यौगिक खेती : हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत का शाश्वत यौगिक खेती कार्यक्रम में प्रतिपादन

प्राकृतिक कृषि के प्रति हों जागरूक

शिव आमंत्रण ■ कुरूक्षेत्र

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने कहा, कि जीरो बजट प्राकृतिक कृषि के प्रति जागरूक होने से ही किसानों को आर्थिक लाभ मिलेगा। इससे पर्यावरण और जल प्रदूषण कम होने के साथ-साथ आने वाली पीढ़ियों को उर्वरा जमीन देने तथा स्वस्थ समाज की रचना के लिए हमें शून्य लागत प्राकृतिक कृषि को अपनाना चाहिए। देशी नस्ल की गाय का पालन कर 30 एकड़ जमीन में कृषि की जा सकती है। किसानों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से विश्व शान्ति धाम में शाश्वत यौगिक खेती का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें बतौर मुख्य अतिथि वह बोल रहे थे। इस कार्यक्रम में 600 से ज्यादा किसानों ने शाश्वत यौगिक खेती और जैविक खेती के बारे में जाना। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन से किया गया जिसमे माउंट आबू से पधारे बीके राजेंद्र प्रसाद, मुख्य अतिथि हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत, अमृतसर की सब जोन इन्चार्ज बीके राज, कुरूक्षेत्र के कृषि विशेषज्ञ डॉ. वजीर सिंह, संयोजक कृषि विशेषज्ञ डॉ. हरिओम, बीके सरोज, बीके सुदर्शन उपस्थित थे।

दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथि।

शून्य लागत कृषि अपनाएं

श्री. देवव्रत ने कहा, कि जीरो बजट प्राकृतिक कृषि के प्रति जागरूक होने से ही किसानों को आर्थिक लाभ मिलेगा। इससे पर्यावरण और जल प्रदूषण कम होने के साथ-साथ स्वस्थ समाज की रचना के लिए हमें शून्य लागत प्राकृतिक कृषि को अपनाना चाहिए। देशी नस्ल की गाय का पालन कर 30 एकड़ जमीन में कृषि की जा सकती है।कुरूक्षेत्र ब्रह्माकुमारीज़ के विश्व शान्ति धाम प्राकृतिक एवं शाश्वत यौगिक खेती विषयक सेमीनार में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। जीरो बजट का वर्णन करते हुए उन्होंने बताया, कि जीरो बजट में बाहर से कुछ भी नहीं खरीदना होता है। उन्होंने शाश्वत यौगिक खेती के क्षेत्र में ब्रह्माकुमारीज़ के माध्यम से किए जा रहे प्रयासों कि भी मुक्तकंठ से सराहना की। माउंट आबू राजस्थान से पधारे राजेंद्र प्रसाद ने मुख्य वक्ता के रूप में शाश्वत यौगिक खेती के बारे में बताया, कि वर्तमान में अनेक रसायनों व कीटनाशकों के प्रयोग से धरती माँ कि शक्ति समाप्त होती जा रही है उससे उत्पन्न होने वाले फल, सब्जियों व अन्न स्वास्थ्य के लिय हानिकारक है। ऐसे समय में ब्रह्माकुमारी के ग्राम विकास प्रभाग के माध्यम से वर्ष 2007 में नया प्रोजेक्ट बनाया गया जिसका नाम शाश्वत यौगिक खेती था। कुछ दिन पूर्व भारत के कृषि मंत्री ने दिल्ली विज्ञान भवन में किसानों व वैज्ञानिकों को पुरे देश में शाश्वत यौगिक खेती के लिए अभियान चलाने को कहा जिससे किसान सशक्त बनेगा। साथ साथ यह भी बताया कि हमे राजयोग का अभ्यास करना चाहिएं जिससे हमारे विचार शुद्ध होते है। अमृतसर की बीके राज ने सभी के प्रति शुभ कामनाएं दी और कहा, कि अन्न का हमारे मन पर बहुत गहरा असर पड़ता है। यदि हम सात्विक अन्न ग्रहण करेंगे, तो हममें सतोगुण कि वृद्धि होगी। हमारे पूर्वज प्रकृति कि पूजा किया करते थे उस समय प्रकृति सतोप्रधान होती थी। पुरुष, प्रकृति और परमात्मा के खेल में पुरुष परमात्मा से शक्ति ले कर प्रकृति को सतोप्रधान बना सकता है।

कुरूक्षेत्र के कृषि विशेषज्ञ डॉ. वजीर सिंह ने कहा कि हम जो खा रहे है, वह जहरयुक्त है। हमें जौविक खेती को अपनाना होगा और साथ ही राजयोग के अभ्यास से अपने मन को शुद्ध बनाना होगा। संयोजक कृषि विशेषज्ञ डॉ. हरिओम ने कहा, कि गुरूकुल कुरूक्षेत्र में जो पद्धति अपनाई जा रही है उसमें आध्यात्मिकता को अपनाना जरूरी है। ब्रह्माकुमारी विश्व शान्ति धाम कुरूक्षेत्र की संचालिका बीके सरोज ने संस्था की गतिविधियों का विवरण किया। बीके हरबंस सिंह ने धन्यवाद किया। बीके सुदर्शन ने मंच संचालन किया।

राष्ट्रीय समाचार

बीके मीरा को दो प्रशस्ति-पत्र से किया सम्मानित

बीके मीरा को प्रशस्ति-पत्र देते जिलाधिकारी एंड्रा वम्सी और भाजपा के शिवकुमार पाठक

शिव आमंत्रण, कुशीनगर। उत्तर प्रदेश के कुशीनगर के स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका बीके मीरा व संस्थान से जुड़े लोगों द्वारा बाढ़ की स्थिति में प्रशासन के साथ मिलकर राहत कार्य में सहयोग करने के लिए जिलाधीकारी एंड्रा वम्सी द्वारा प्रशस्ति पत्र भेंटकर सम्मानित किया। इस दौरान जिलाधिकारी ने बीके मीरा समेत पूरी टीम को उत्कृष्ट सेवाओं के लिए बधाई दी और भविष्य में भी इस प्रकार के सहयोग करने की अपील की। इसी क्रम में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य पर भारतीय जनता पार्टी द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भाजपा जिला कार्यसमिति के क्षेत्रीय संगठन मंत्री शिवकुमार पाठक ने भी बीके मीरा को समाज कल्याण के लिए की गयी सेवाओं के लिए प्रशस्ति पत्र भेंटकर सम्मानित किया।

संस्थान का सेवाभाव है सम्मान योग्य : बहुगुणा

शिव आमंत्रण, लखनऊ। ब्रह्माकुमारी बहनों की जो साधना है, त्याग है, सेवा है उसका मैं हृदय से सम्मान करती हूं ये उक्त विचार महिला और परिवार कल्याण मंत्री डॉ. रीता बहुगुणा जोशी के हैं जो उन्होंने उत्तर प्रदेश लखनऊ के गोमती नगर सेवाकेंद्र पर आयोजित उडी हेल्थकेयर और हैप्पी लाईफ थ्रू राजयोग मेडिटेशन रिट्रीट के दौरान कहे। इसके साथ ही उन्होंने संस्थान के कार्यों को सराहा और माउंट आबू आने की इच्छा जाहिर करते हुए जीवनशैली को अच्छा बनाने का संकल्प लिया। इस मौके पर मुख्य वक्ता । के तौर पर आए माउंट आबू से उडी हेल्थ केयर के संयोजक और प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ बीके डॉ. सतीश गुप्ता ने सभी को बहुत ही सुंदर तरीके से स्वस्थ जीवन जीने की कला सिखाई। इस रिट्रीट का शुभारंभ महिला और परिवार कल्याण मंत्री डॉ. रीता बहुगुणा जोशी, बीके डॉ. सतीश गुप्ता, कानपुर सबजोन प्रभारी बीके दिद्या, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके राधा समेत अन्य बहनों ने दीप जलाकर किया। इसके साथ ही सभी अतिथियों को शॉल ओढ़ाकर व ईश्वरीय सौगात भेंटकर शुभकामनाएं दी गई। इस मौके पर इलाहाबाद सबजोन प्रभारी बीके मनोरमा, कासगंज सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सरोज समेत उत्तर प्रदेश के अनेक स्थानों से बीके भाई-बहनों ने हिस्सा लिया और रिट्रीट का पूरा लाभ लिया।

शिविर के उद्घाटन अवसर पर डॉ. रीता बहुगुणा जोशी।

कानपुर में व्यसनमुक्ति अभियान प्रारंभ

शिव आमंत्रण, कानपुर। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मेडिकल प्रभाग द्वारा चलाये जा रहे व्यसन मुक्ति अभियान का कानपुर के बर्रा में केबिनेट मंत्री सत्यदेव पचौरी की पत्नी रमा पचौरी, अल्टरनेट मेडीसीन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. वी. कुमार, पूर्व लेबर कमिश्नर सीताराम मीना, खेराबाद आई हॉस्पिटल के डॉ. वाई. के. महेंद्रा, वरिष्ठ निष्चेतक वी. के. सिंह, ग्लोबल इनिशियेटिव ऑफ टूबैको अवेयरनेस के प्रोजेक्ट डायरेक्टर बीके डॉ. सचिन परब, दिल्ली से आये परिवर्तन सेंटर फॉर मेंटल हेल्थ के निदेशक डॉ. अवधेश शर्मा, डॉ. रामबाबू, एवं बर्रा क्षेत्र की प्रभारी बीके दुलारी ने दीप जलाकर शुभारंभ किया। मेहरबान सिंह पुरबा के स्थानीय सेवाकेंद्र पर संपन्न हुए इस कार्यक्रम में रमा पचौरी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, कि व्यसनों के कारण परिवार में कलह एवं समाज में जो झगड़े हो रहे हैं उनका महिलाओं पर बुरा प्रभाव पड़ता है और वह उत्पीड़न का शिकार होती हैं, साथ ही उन्होंने सेवाकेंद्र द्वारा प्रारंभ किए गये प्रदेश स्तरीय अभियान की प्रशंसा करते हुये कहा कि इस व्यसन मुक्ति अभियान को सफल बना रहे संस्थान के सदस्य बधाई के पात्र हैं। इस मौके पर डॉ. सचिन परब ने कहा, कि महाराष्ट्र में बीके बहनों द्वारा जनजागृति एवं आध्यात्मिक चेतना द्वारा विशेषकर स्कूलों में सराहनीय कार्य किया गया है एवं राजकीय पुरस्कार मिले हैं।

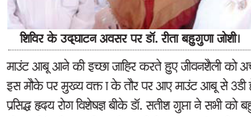

अभियान का प्रारंभ दीप प्रज्ज्वलन से करते अतिथि।

बच्चों को कराई नशे से बचने की प्रतिज्ञा

शिव आमंत्रण ■ करनाल

हरियाणा, करनाल के नीलोखेरी में स्थानीय सेवाकेंद्र द्वारा नशा मुक्ति अभियान के तहत एसडीएमएन विद्या मंदिर, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल, बीडीपीओ कार्यालय एवं गुरूब्रह्मानंद पॉलीटेक्निक कॉलेज में राजयोग द्वारा जीवन जीने की कला विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। व्यसन मुक्ति अभियान के निदेशक बीके डॉ. सचिन परब ने कार्यशाला में बच्चों को नशे के दुष्प्रभाव बताते हुये इनका सेवन न करने की प्रतिज्ञा कराई एवं जीवन में भौतिक शिक्षा के साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग ध्यान का अभ्यास करने की सलाह दी।

उन्होंने कहा, समाज की कई प्रवृत्तियां स्कूल में जाने वाले बच्चों को जानबूझ कर नशे में धकेला जा रहा है ताकि उनको नशे की लत लगी रहे और उनको बिना मेहनत पैसा मिलता रहे। उम्र कम होने के कारण वह आसानी से नशे के गिरफ्त में आ जाते है। नशा बहुत बुरी आदत है। जिसको यह लत लग जाती है तो पूरे परिवार को उजाड़ कर रख देती है। युवा नशे से बचेगा तो देश बचेगा। जो नशे के आदी है और नशा छोड़ना चाहते है वह ब्रह्माकुमारी आश्रम से सीख सकते है।

डॉ. सचिन परब ने कार्यक्रम के पश्चात पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा, कि ब्रह्माकुमारीज़ प्रभाग द्वारा 2012 में नशामुक्ति अभियान की शुरूआत हुई। अब यह अभियान 20 राज्यों में चलाया जा रहा है तथा जुलाई मास में पंजाब व हरियाणा में अभियान की शुरूआत की गई। इस अवसर पर सेवाकेन्द्र संचालिका बीके संगीता, बाक्रिपुर के बीके महेन्द्र तथा बीके प्रवीण उपस्थित थे।

माउण्ट आबू से नशामुक्ति प्रोजेक्ट डायरेक्टर सचिन परब बीडीपीओ कार्यालय में जानकारी देते हुए।

लातूर सेंटर पर दीक्षांत समारोह

राजयोग ब्रह्माकुमारीज़ नामक एप्लिकेशन की भी लांचिंग

शिव आमंत्रण ■ लातूर

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शिक्षा प्रभाग और यशवंतराव मुक्त विद्यापीठ के संयुक्त तत्वाधान में मूल्यनिष्ठ शिक्षा पर चलाये जा रहे पाठ्यक्रम में बीए के प्रथम बैच के विद्यार्थी का दीक्षांत समारोह महाराष्ट्र के लातूर पीसीपी सेंटर पर आयोजित हुआ। इस समारोह में डिग्री प्राप्त करने वाले अस्सी साल के बुजुर्ग तो पच्चीस साल के नौजवान भी थे।

समारोह का शुभारंभ समाज सेवा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके प्रेम, साहू कॉलेज, बसवेश्वर और दयानंद कॉलेज, राजमाता जीजामाता और रिलायंस कॉलेज के प्राचार्य, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके नंदा, बीके पुष्पा समेत अनेक गणमान्य लोगों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बीके प्रेम ने कहा, आज नैतिक गुणों की जरूरत हर एक को है तभी हम यहाँ हर आयु के व्यक्ति को देख रहे है और हर एक को अपने धर्म यानी आंतरिक मूल्यों को जानना जरूरी है। बीए मूल्य एवम् आध्यात्मिकता के नोडल सेंटर को ऑर्डिनेटर बीके विकास ने कहा, कोई लॉ की पढ़ाई करता है तो उसको एडवोकेट कहा जाता है और आपको मूल्य की डिग्री मिली है तो आपको मूल्यवर्धित कहा जायेगा। यह उपाधि आपको समाज सेवा के लिए प्रयोग करनी है। श्री त्रिपुरा कनिष्ठ विज्ञान महाविद्यालय की प्राचार्या सौ. सुलक्षणा केवलराम ने कहा, जैसे रिमोट कंट्रोल से साइंस के साधनों को कंट्रोल कर सकते है वैसे ही मूल्यों से मन को कंट्रोल कर सकते है। लेकिन इसको मेजर सबजेक्ट के तौर पर महत्व देने की जरूरत है।

राजयोग ब्रह्माकुमारीज़ नामक एंड्राइड निर्मित एप्लिकेशन का लॉचिंग करते अतिथि।

सूचनाएं अब फिंगर टिप पर

इसी कार्यक्रम के दौरान ब्रह्माकुमारीज़ लातूर सेवाकेंद्र ने राजयोग ब्रह्माकुमारीज नामक एंड्राइड निर्मित एप्लिकेशन का लॉचिंग उपस्थित अतिथियों के हाथों से किया गया। इस एप के बारे मे बीके नंदा ने बताया, कि इस एप ने ब्रह्माकुमारीज़ की सारी इन्फॉर्मेशन एक फिंगर टिप पर लाकर रख दी है। इस एप में हर रोज की मुरली सुन, देख और पढ़ सकते है, ब्रह्माकुमारीज़ के तीन टीवी चैनल देख सकते है, पीएमटीवी, राजयोगा टीवी, ओम शान्ति टीवी आप देख सकते है और रेडिओ मधुबन सुन सकते है। मधुबन के क्लासेस, समाचार पत्र-पत्रिकाएं, देख सकते है। आप ब्रह्माकुमारीज़ के सभी सेंटर्स के एंड्रेस ढुंढ सकते है। ओपन फोरम, स्टडी पॉइंट जैसी सुविधा भी उपलब्ध की गई है। फ्री शिवबाबा सांग्स, मोबाईल रिंगटोन्स, चैटिंग की भी सुविधा है। इतना ही नहीं सेवाकेंद्र के कार्यक्रम लाईव देख सकते है। भविष्य में इस ॲप को और भी परफैक्ट किया जायेगा। गुगल प्ले स्टॉर पर यह एप उपलब्ध है।

प्रकृति के साथ प्रभु याद के चिरंतन पल...

शिव आमंत्रण ■ अहमदनगर

गलाकाट प्रतिस्पर्धा के दौर में जीवनयापन की भागदौड़ में लगे लोगों को कभी कुछ पल सुकुन के चाहिए होते हैं। उसके लिए वो एक स्थान का चुनाव करता है जहां एकांत और सुंदर प्रकृति का नजारा हो। लेकिन अगर एकांत और प्राकृतिक सौंदर्य के बीच कुछ पल प्रभु की याद में सफल हो जाएं तो उससे अच्छा और क्या हो सकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए महाराष्ट्र के अहमदनगर स्थित साइबन पर्यटन स्थल के बीच ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा बनाये गये 'साइबन में मधुबन' में शांति और आनंद नामक ध्यान कुटिया का निर्माण किया है। दुःखभरी दुनिया से कोई भी यहां आकर ईश्वरीय शक्तियों का आनन्द ले सकता है। इसके शुभारंभ अवसर पर माउंट आबू से आयी बीके मंजू ने कहा, इस इको फ्रेंडली कुटिया से साधक को मदद मिलेगी, एकांत और कुदरत का समन्वय होने से आत्मचिंतन सहज होके तणाव से दूर होते जायेंग, सच्चा आनंद और शांति का अनुभव करेंगे। साईबन मे मधुबन हमें माऊंट आबू के मधुबन की याद दिलाता है। साईबन में मधुबन की निर्माता डॉ. सुधा कांकरिया ने कहा, राजयोग साधना एक अंतर्यात्रा है और यह अंतर्यात्रा सहज, सुलभ हो इसलिए कुदरत की गोद में यह स्थान बनवाया गया है। अहमदनगर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके राजराजेश्वरी, बीके शोभा, बीके प्रभा, बीके सुवर्णा और शहर के गणमान्य लोग मौजूद थे। साथ ही अन्य सदस्यों ने भी अपनी शुभकामना व्यक्त की। अंत में सभी ने मिलकर राजयोग के अभ्यास द्वारा वातावरण में शांति के प्रकम्पन्न फैलाये।

शांति की कुटिया का उद्घाटन करते बीके मंजू, डॉ. सुधा कांकरिया व अतिथि।

ब्रह्मा बाबा के तार ने बदला जिन्दगी का रूख

शख्सियत

राजयोगिनी बीके कमला, इंदौर जोन की प्रभारी है, रायपुर में रहती हैं।

उत्तर प्रदेश के कुण्डा, टाउन डेरवाबाजार, भावनपुर जन्मी बीके कमला का जीवन बाल्यकाल से ही आध्यात्मिकता से ओत प्रोत था। घंटों पूजा पाठ करना और ईश्वरीय कार्यों में रूचि रखना इनके आदतों में शुमार था। एक मध्यम परिवार में बीके कमला का जन्म 18 अगस्त सन् 1942 का हुआ। उनके पिता जी वाराण्सी में पुलिस विभाग में थे। परन्तु माता गृहणी के रूप में काम काज सम्भालती थी परन्तु उनमें लोगों के लिए परोपकार और दया भाव कूट कूटकर भरा था। पाँच बहनों और दो भाईयों में सबसे बड़ी होने के कारण परवरिश में कोई कमी नही रही। बेसिक शिक्षा बनारस जिले में पुरी हुई।

विश्वनाथ मंदिर जाकर करती थी घंटो पूजा

ब्राह्मण परिवार और वाराणसी में रहने के कारण बचपन से ही मुझे पूजा-पाठ और भक्ति-भावना में विशेष रूचि थी। वे नित्यप्रति परमात्मा को याद किया करती थी और सत्संगो में जाना-आना था। ईश्वरी के प्रति इतनी लगन थी कि विश्वनाथ मंदिर में जाकर वहाँ लिखे श्लोकों और श्लोगन आदि को जिसमें निजानंद स्वरूपम् शिवोहम्, शिवोहम्... को बार-बार पढ़ा करती तो मुझे बहुत ही अच्छी अनुभूति होती थी। मेरा मन आनंद से भर जाता था। इससे परमात्मा के प्रति विशेष स्नेह और लगाव होने लगा था।

परमात्मा ने प्रारम्भ से ही रखा बंधनमुक्त

धीरे-धीरे समय बितता गया तो मेरी मन-बुद्धि परिवर्तित होने लगी। सोचने का तरीका सकारात्मक होता गया। ये बात मुझे उस समय पता नहीं चला। यह अनुभूति अभी महसूस होती हैकि प्रारम्भ के दिनों में क्यों ऐसा होता था। जैसे ही मैं बालिग हुई परिवार के लोगों ने मेरी शादी कर दी। परन्तु मेरे लौकिक युगल भी आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे। उसी समय हमारे युगल का स्थानान्तरण जबलपुर हो गया। युगल उस समय एल. आई. सी. में काम करते थे और 1962 में जबलपुर आना हुआ।

ओम प्रकाश भाई जी के सान्निध्य ने बदला जीवन

संयोग ही था कि ठीक हमारे घर के सामने ब्रह्मकुमारीज संस्थान का सेन्टर था जिसके संचालनकर्ता उस समय ओमप्रकाश भाई जी थे। मेरे पति के एक दोस्त अक्सर सेन्टर जाया करते थे फिर धीरे-धीरे मेरे पति भी उनके संग के रंग में ढलते गये और वे भी इसके नियमित विद्यार्थी बन गये। एक दिन जब मैं उनके साथ सेन्टर गयी तो सब लोग योग कर रहे थे। तो मुझे प्रत्यक्ष अनुभव हो रहा था कि मैं परमात्मा के लगन में मगन हो गयी। परन्तु इंदौर जोन के पूर्व निदेशक ओम प्रकाश भाई जी ने जीवन की सभी समस्याओं से मुक्ति का एकतरह से रास्ता खोल दिया।

जल्दी खुल गया बुद्धि का ताला

सेवाकेन्द्र पर एक बहन जी ने सात दिवसीय नि:शुल्क कोर्स कराया। उसके बाद रोज मुरली सुनने लगी। तो टाईम नहीं लगा, बुद्धि का ताला तुरन्त खुल गया। और मैं परमानंद का अनुभव करने लगी। तब मुझे विश्वास हो गया कि यह ज्ञान कोई साधारण व्यक्ति नहीं दे सकता है। यह ज्ञान तो बहुत ही अनमोल है। मुझे फिर दृढ़ विश्वास हो गया कि परमात्मा इस धरा पर आ चुके है और उनके द्वारा ही यह सत्य गीता ज्ञान दिया जा रहा है। फिर मैं इस ज्ञान मार्ग पर आगे बढ़ने लगी।

परिवार ने नहीं किया विरोध

मैं सौभाग्यशाली हूँ कि उस दौरान ईश्वरीय ज्ञान में निकलने के बाद मुझे किसी प्रकार का कोई भी विरोध का सामना नहीं करना पड़ा। आत्मज्ञान प्राप्ति के बाद जब मैं ज्ञान मार्ग पर आगे बढ़ने लगी तो मेरा मन परमात्मा में ही आनंद की अनुभूति करती। और मेरे पति जब घर से ऑफिस जाते तो मैं सेन्टर जाकर वहाँ की बहनो को मुरली सुनाने को कहती, ज्ञानामृत पीती और योग करती।

मैंने कहा था ज्ञान के लिए छोड़ सकती हूं घर

वैसे तो मेरे परिवार में कभी इसका विरोध नहीं हुआ परन्तु दोस्त मित्र आते थे उन्होंने सास ससुर को थोड़ा भड़काने का कार्य किया। जैसे ही थोड़ा भी अनबन हुआ तो मैने फैसला लिया कि हम इस ज्ञान के लिए घर छोड़ सकते है और युगल से साफ कह दिया कि ऐसी परिस्थितियों में मैं इस घर में नहीं रह सकती हूँ। उन्होनें कहा कि तुम संसारिक जीवन जीयो। हमें संसार के हिसाब से अपने जीवन को जीना चाहिए। हमें लगता है कि समाजिक दृष्टिकोण से तुम्हारे लिए यह मार्ग उचित नहीं है, तो मैंने कहा कि मैं घर छोड़ सकती हूँ पर इस ज्ञान मार्ग को नहीं छोड़ सकती क्योंकि मैं अब ज्ञान के बिना नहीं रह सकती हूँ।

तब जाकर परिवार से मिली मुक्ति

तब मेरे पति ने अपने माता-पिता को समझाया और उनसे कहा कि हमें इसे अपना जीवन स्वतंत्र रूप से जीने देना चाहिए क्योंकि इसका मन अब पूर्ण परमात्मा में लग चुका है। इसका मन अब संसार में नहीं भटक सकता है। तब मैं फिर स्वतंत्र रूप से सेन्टर में रहने लगी। और ईश्वरीय सेवा करते हुए रोज परमात्म महावाक्य दमुरलीड्ड सुनती और योगाभ्यास करती। तब मुझे अनुभव होने लगा कि 'जो मुझे जीवन में पाना था वो मैंने पा लिया और कुछ पाना बाकि न रहा'।

सद्बुद्धि से ही सद्गति

सद्बुद्धि से ही सद्गति होती है। सच्चे दिल पर साहेब राजी। नि:संदेह परमात्मा इस धरा पर आ चुके है और प्रजापिता ब्रह्मा बाबा को अपना साकार माध्यम बना कर इस कलियुगी पतित दुनिया को सतयुगी पावन दुनिया में परिवर्तन करने का अपना दिव्य एवं अलौकिक कार्य ब्रह्माकुमारीज संस्थान के माध्यम से वर्तमान में 80 वर्षो से कर रहें है।

साईलेंस की शक्ति से बढ़ी आन्तरिक पावर

मैंने राजयोग से तीन बार परमात्मा को अनुभव किया है जिसमें मैंने साइलेंस की शक्ति से स्वयं को एक पवित्र आत्मा अनुभव किया। मैं निश्चित रूप से कहती हूँ कि राजयोग से आपकी संबंधों में मधुरता, व्यवहार में कुशलता और आपके सोचने का तरीका सकारात्मक होगा। एक बार ब्रह्मा बाबा ने कहा था कि बच्ची आप परमात्मा के निकट कि आत्मा हो इसलिए आप दूसरों को परमात्मा का अनुभव कराना। और आज रियलिटी में परमात्मा ने मुझे रायपुर सेवा केन्द्र की मुख्य प्रशासिका बनाकर मेरे द्वार राजयोग मेडिटेशन से कई लोगों का भाग्य परिवर्तन किया है और अभी भी ओ करनकरावनहार मुझसे ये काम करवा रहा है। और अचानक एक बार मेरे ससुर जी सेंटर पर आये और उन्होंने कहा कि आप तो साक्षात् लक्ष्मी हो। तो मेरा सारा मन का मैल धूल गया।

हल्का होकर सम्भाल रही हूं सेवा

जब ओम प्रकाश भाई जी का देहावसान हो गया उससे पूर्व वे मुझे कहते थे कि तुम्हे सभी जिम्मेवारी सम्भालनी है। भाई जी ने वे सभी विशेषताएं भरी जो एक आध्यात्मिक नेता के तौर पर होनी चाहिए। जिससे मैं सहयोगी बहनों के साथ पूरे जोन की सेवा करते हुए हल्के रहने का प्रयास करती हूँ। भाई जी हमारे बीच नहीं हैं परन्तु उनकी प्रेरणा आज भी हमें प्रेरित करती रहती है। बीके हेमलता, बीके अनिता, बीके आशा के साथ मुख्य बहनें मिलकर सेवाकेन्द्र का अच्छा संभाल रही हूँ।

पहली नजर में बाबा में दिखा ईश्वरीय चमत्कार

ज्ञान में आने के बाद ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का मुख्यालय राजस्थान के माउंट आबू जाने की मेरी तीव्र इच्छा होने लगी क्योंकि वहाँ मनुष्य आत्माओं का परमात्मा से साकार में मिलन मनाया जाता था। जो उस समय प्रजापिता ब्रह्मा बाबा, जिनका मूल नाम दादा लेखराज था। उनको मैंने पहली बार एक पत्र लिखा तो बाबा का जवाब आया कि बच्ची आप सूर्यवंशी घराने की आत्मा हो तब मैं उस समय सेन्टर में रहकर न्यूज़ बनाना सीख रही थी। और मैंने उस समय बाबा से मिलने का निश्चय किया।

पूरा हुआ संकल्प

फिर धीरे-धीरे मेरा ये संकल्प मई 1966 में पूरा हुआ और मैं पहली बार बाबा से साकर में मिली तो मैं उस समय 23 वर्ष की उम्र में थी। और 10 बजे बाबा से उनके झोपड़ी में मिली तो वे उस समय एक दिव्य एवं अलौकिक पुरूष लग रहे थे। ये तो मेरा बाबा है जिनके तन में उस समय परमात्मा आते थे और हम बच्चों को दृष्टि देकर नजरों से निहाल कर देते थे और हम सम्मुख परमात्म मिलन और परमात्म वाणी सुना करते थे। मैंने अपना जीवन उसी समय ईश्वर को समर्पित करने का निर्णय किया।

राष्ट्रीय समाचार

अजमेर में नये भवन का शिलान्यास

शिलान्यास कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि।

शिव आमंत्रण, अजमेर। अजमेर में ब्रह्माकुमारीज़ के केशवनगर के नए भवन का द्वारका नगर चौरसिया वास रोड पर शिलान्यास किया गया। इस मौके पर उपस्थित शिक्षा राज्यमंत्री वासुदेव देवनानी ने कहा, कि यहां एक सुंदर राजयोग केंद्र का निर्माण होगा जिससे शांतिपूर्ण वातावरण होगा। और यहां सिखाए जा रहे सत्संग में बच्चे युवा सभी भाग ले सकेंगे। वहीं उपस्थित महापौर धर्मेंद्र गहलोत व उनकी प ी हेमा ने मंत्रोच्चारण के साथ भूमि पूजन कर आधारशिला रखी। जहां पार्षद वीरेंद्र वालिया, आबू रोड शांतिवन के मुख्य अभियंता बीके भरत, बीके भानू, डॉ. अशोक चौधरी, प्रकाश जैन, बीके कमलेश, बीके आशा समेत संस्था के कई सदस्य मौजूद रहे। इस मौके पर महापौर धर्मेंद्र ने कहा, इन पवित्र बहनों का जीवन ही ईश्वर को अर्पण है और इस संस्था का मूल उद्देश ही हर दिल में ईश्वर का घर बनाने का है। इस आधारशिला को रखकर सभी मनुष्यात्माओं के कल्याण की अलख जगाई जा रही है। बीके शांता ने कहा, कि राजयोग की विधि से जीवन का अंधकार नष्ट कर जीवन को नई दिशा मिलती है। जिससे सुख शांति महसूस होगी। पार्षद वीरेंद्र वालिया ने कहा, कि स्मार्ट सिटी में और एक स्मार्ट कार्य होने जा रहा है। बीके आशा ने अतिथियों का स्वागत किया, बीके कीर्ति ने सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया, बीके ज्योति ने आभार व्यक्त किया, संचालन बीके रूपा ने किया।

फुटबाल टेनिस चेम्पियनशिप वेबसाईट प्रारंभ

वेबसाइट शुभारंभ अवसर पर बोलते जिला कलेक्टर।

शिव आमंत्रण, डेंकानाल। ओड़िसा के डेंकानाल में नेशनल सीनियर फुटबाल टेनिस चेम्पियनशिप वेबसाईट के शुभारंभ अवसर पर जिला कलेक्टर भूपेंद्र सिंह पुनिया, स्थानीय सेवाकेंद्र प्रभारी बीके ऊषा, राष्ट्रीय फुटबाल संघ के सचिव सहदेव रावत, जिला अध्यक्ष राजकिशोर बेहरा, राष्ट्रीय प्रो और मीडिया प्रबंधक बीरांची नारायण सेठ, जिला पंचायत के अधिकारी निरंजन मिश्रा समेत खेल जगत से जुड़े लोग उपस्थित थे। सदर ब्लाक ऑफिस के कांफ्रेस हाल में हुए इस कार्यक्रम में बीके ऊषा ने कहा, कि सफलता के लिये अहंकार को जीतने एवं जिम्मेदारियों पर मन केंद्रित करने की आवश्यकता होती है वहीं भूपेंद्र सिंह पुनिया एवं अन्य लोगों ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

दिव्यनगरी प्रोजेक्ट बना सौर ऊर्जा में स्वावलम्बी

आठ किलो वाट के सोलर संयत्र का उद्घाटन करती बीके शीलू तथा बीके ललित।

शिव आमंत्रण, अहमदाबाद। ब्रहमाकुमारीज़ संस्थान इन दिनों ऊर्जा संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास कर रही हैं। जिसका एक प्रमाण सेवाकेंद्र अहमदाबाद के नवरंगपुरा दिव्य नगरी प्रोजेक्ट में मिलता है। यहां पर सौर उर्जा से संचालित बिजली के लिए सोलर पैनलो जिसकी क्षमता आठ किलो वाट है, का उद्घाटन बीके शीलू ने अपने हस्त कमलों से किया। अब सेवाकेंद्र को उपयोग के लिए बिजली इसी सौर उर्जा से प्राप्त होगी। ब्रहमाकुमारीज़ संस्थान की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके शीलू के अहमदाबाद, नवरंगपुरा पहुंचने पर खुशनुमा जीवन विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान बीके शीलू ने सदा खुश रहने के हर परिस्थिति में सर्व के प्रति शुभभावना रखने की प्रेरणा दी। माउंट आबू से आए सीए बीके ललित ने भी अपने अनुभवों से सभी को लाभान्वित किया। इस कार्यक्रम का लाभ आस-पास के निवासियों ने लिया। इसी क्रम में सेवाकेंद्र द्वारा चलाये जा रहे दिव्यनगरी प्रोजेक्ट के विशेष बच्चों के लिए स्नेह मिलन का आयोजन किया गया। जिसमें बीके शीलू और बीके ललित ने बच्चों को नैतिक व आध्यात्मिक गुणों की धारणा से होने वाले लाभ बतायें और राजयोग के अभ्यास द्वारा गहन शांति की अनुभूति करायी।

गुलबर्गा के कुलपति एस. आर. निरंजन के विचार

750 में से किसी भी विश्वविद्यालय में अच्छा इन्सान बनाने की क्षमता नहीं

कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए एस. आर. निरंजन।

शिव आमंत्रण ■ गुलबर्गा

भारत देश में 750 विश्वविद्यालय है लेकिन किसी भी विश्वविद्यालय में एक अच्छा इन्सान बनाने की क्षमता नहीं है। लेकिन वह कार्य प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्वविद्यालय की बहनें कर रही है। उक्त विचार गुलबर्गा विश्वविद्यालय के कुलपति एस. आर. निरंजन ने व्यक्त किये। कर्नाटक के गुलबर्गा में न्यू डायमेनशन टू क्रिएट हार्मोनियस सोसाइटी विषय पर संस्थान के समाज सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में वह बोल रहे थे। उन्होंने कहा, वैसे लौकिक शिक्षा की कमी है तो भी आदमी भटक जाता है और समाज संरचना में सही मदद नहीं कर सकता। आज कायदे या कानून बहुत है लेकिन कोई भी कायदा या कानून किसी को एक अच्छा आदमी बना नहीं सकता। हमारे देश में आध्यात्मिकता का बल जबरदस्त है। वह इन्सान को शांति में रहना सिखाती है। अपना मन शांतपूर्ण, रचनात्मक और प्रभावी होना चाहिए और उसको समाज की संरचना के लिए उपयोग में लाना चाहिए। इसके लिए ब्रह्माकुमारीज़ का योगदान समाज के लिए अहम है। संस्थान जो बता रही है वह आप धारण करो, परिवार को धारण कराओ, पड़ोसियों को बताओ तो इस धरती पर स्वर्ग आने में देरी नहीं लगेगी। इस सम्मेलन का शुभारंभ कुलपति प्रोफेसर एस. आर. निरंजन, पूर्व इलेक्शन कमिश्नर लक्सन पटेल, प्रभाग के उपाध्यक्ष बीके अमीरचंद, राष्ट्रीय संयोजक बीके प्रेम, गुलबर्गा सबजोन प्रभारी बीके विजया समेत प्रभाग के वरिष्ठ पदाधिकारीयों ने दीप जलाकर किया। अंत में अतिथियों को बीके बहनों ने शॉल ओढ़ाकर व ईश्वरीय सौगात भेंटकर सम्मानित किया।

समाज सेवा प्रभाग की मीटिंग

दूसरे दिन आयोजित समाज सेवा प्रभाग की मीटिंग में प्रभाग के उपाध्यक्ष बीके अमीरचंद ने सेवा का विस्तार करने और समाज को व्यसनमुक्त करने पर अपने विचार व्यक्त किये। प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके प्रेम ने समाज सेवा का विस्तार करने के लिए महिने में एक बार बड़े सेवाकेन्द्र पर एक मीटिंग रखने का विचार व्यक्त किया। गुलबर्गा की सुप्रीटेंडेंट ऑफ पुलिस सविता हुगार ने ब्रह्माकुमारीज़ के कार्य की सराहना की और पीस आफ माइंड चैनल को कहा मन को शांति देने वाला चैनल।

मन को स्वच्छ व सकारात्मक बनाने की अत्यंत आवश्यकता

सुपर माईंड कार्यक्रम में ऊर्जा मंत्री पारस जैन के विचार

शिव आमंत्रण ■ उज्जैन

मध्यप्रदेश में उज्जैन के शिवदर्शन धाम हार्मनी हाल में श्रेष्ठ मन श्रेष्ठ भविष्य पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मन को सशक्त बनाने व उसमें छिपी अनंत शक्तियों को जाग्रत करने के उद्देश्य से आयोजित इस कार्यक्रम में ऊर्जा मंत्री पारस जैन ने अपनी शुभकामनायें व्यक्त करते हुये कहा कि आज के समय में मन को स्वच्छ व सकारात्मक बनाने की अत्यंत आवश्यकता है तथा सुपर माइंड – सुपर फ्युचर जैसे कार्यक्रम से निश्चित ही सभी का भविष्य उज्ज्वल बनेगा।

बीके शक्तिराज ने स्वागत भाषण में, मन निहित अनंत शक्तियों को फिर से जगाने के लिये विभिन्न विधियाँ बताई एवं सकारात्मक चिंतन करने की बात कही। उन्होंने कहा, जहाँ शारीरिक योग प्राणायाम–आसन आदि आवश्यक है उससे भी ज्यादा आवश्यक मन का योग अर्थात मन का शुद्धिकरण। राजयोग अर्थात मन को एकाग्र कर परमपिता परमात्मा में लगाना है। जिससे तनावमुक्ति होती है, मनोबल बढ़ता है, राग द्वेष समाप्त होते है।

सुपर माईंड कार्यक्रम का उद्घाटन करते ऊर्जा मंत्री पारस चंद्र जैन व अन्य अतिथि।

मुस्कुराने से पॉजीटीव एनर्जी जनरेट होती है। नकारात्मक विचार बीमारी देते हैं। मनुष्य को अपने विचारों की संख्या को कम कर समर्थ विचारों की ओर ध्यान देना चाहिए।

मुस्कुराना सीखिये

यदि आप क्रोध करते है तो केंसर को, ईर्ष्या के विचार है तो अल्सर को, घमण्ड अहंकार से सर्वाईकल को आमंत्रित करते है। अत: मुस्कुराना सीखिए, अच्छे विचार रखिए, क्षमा भाव रखिए। मुस्कुराना सीख जाए तो हेल्थ इन्श्योरेन्स नहीं कराना पड़ेगा। जिस से भी मिले मुस्कुराकर मिले जिससे आपके हैप्पीनेस की चैनल बढ़ती जाएगी। इस अवसर पर सैकड़ो की तादाद में श्रोतागण उपस्थित थे, नगर के गणमान्य नागरिक, राजनितिज्ञ, एडवोकेट, चिकित्सक, शिक्षाविद्, युवा स्टूडेन्टस, साहित्यकार, प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ ऊर्जा मंत्री पारस चन्द्र जैन, अंतराष्ट्रीय माइंड व मेमोरी मैनंजमेंट के युवा ट्रेनर शक्तिराज सिंह, दिनेश त्रिपाठी (संतमीरा कान्वेट स्कूल), डॉ. विमल गर्ग, एम. एस. रावत उप जेल अधिक्षक, राजयोगिनी उषा दीदी ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया । दिन के समय विक्रम विश्वविद्यालय, प्रशान्ती कॉलेज एवं सेन्ट्रल जेल में भी प्रोगाम किया।

तनाव का मुख्य कारण बन रहा है सोशल मीडिया

शिव आमंत्रण, बिलासपुर। जीवन में इंटरनेट, मोबाइल और सोशल मीडिया का अधिक प्रयोग तनाव का मुख्य कारण बना हुआ है। इनमें सकारात्मक बातें तो होती हैं किन्तु नकारात्मक या व्यर्थ विचारों को उत्पन्न करने वाले तथ्यों व समाचारों की अधिकता होती है क्योंकि आज का वातावरण ही नकारात्मक है जिसका सीधा प्रभाव हमारे मन पर पड़ता है और इन बातों में उलझकर हमसे व्यर्थ कर्म होने लगते हैं। उक्त बातें छत्तीसगढ़ के बिलासपुर स्थित एनटीपीसी सीपत में सीआईएसएफ के जवानों के लिए आयोजित स्ट्रेस मैनेजमेन्ट रिट्रीट में सिक्यूरिटी सर्विस विंग के मुख्य वक्ता कमाण्डर बीके शिव सिंह ने कही। आध्यात्मिकता कोई धर्म नहीं है, स्वयं को व स्वयं में निहित शक्तियों को पहचानना ही आध्यात्मिकता है। हर व्यक्ति व परिस्थिति के बारे में हम कैसे अच्छा सोचें यह आध्यात्म ही हमें सिखाता है। इसका अच्छा प्रभाव यह पड़ता है कि हमारे मन की शक्ति बढ़ जाती है। तनावमुक्ति के लिए हमें कर्मसिद्धान्त का भी पता होना जरूरी है कि जैसा हमारा कर्म होता है वह वैसे ही हमारे तक पहुंच जाता है। अच्छे कर्मों का परिणाम अच्छा और बुरे कर्म का परिणाम बुरा। प्रथम सूत्र मे टिकरापारा सेवाकेंद्र संचालिका बीके मंजू ने हर हाल में मुस्कुराते को कहा।

लोक लाज, भय और निन्दा की परीक्षाओं से पार होना

इस प्रकार, बहुत नर-नारी ज्ञानामृत पीते, अच्छे नियमों का पालन करते, अपने जीवन का कल्याण कर रहे थे। परन्तु ऐसा हुआ कि कई माताओं के पति जो कि अपने व्यापार के सिलसिले में कुछ काल के लिए विलायत में गए थे, अब जब वापस लौटे तो उन्होंने भोग-विलास की कामना की। विषय विकारों के प्यासे पति अपनी काम-चेष्टा पूरी न होने के कारण अबला नारीयों पर अत्याचार करने लगे। वे उन्हें 'ओम् मण्डली' में जाने और ज्ञानामृत पीने से रोकने लगे। परन्तु जिन्होंने इतने समय से ज्ञानामृत पीकर अपने जीवन को पावन बनाया था, अब वे शक्तिमय आत्माएँ अपने ऊपर काम-कटारी कैसे चलाने दे सकती थीं? वे अमृत पीये बिना कैसे रह सकती थी? जिन्हें यह निश्चय हो चुका था कि अब परमपिता परमात्मा पवित्र, सतोप्रधान सृष्टि की पुनर्स्थापना करना चाहते हैं और हमें अब आसुरी कर्म छोड़ देवी-देवता बनना है, वे आत्मा का हनन करने वाले इस हलाहल विष का कैसे सेवन कर सकती थी? वे तो अब ज्ञान की मस्ती में निम्नलिखित गीत गाया करती थी- मैं क्षेत्र-नगर की शक्ति हूँ, और ओम् मण्डली में रहती हूँ। स्वधर्म का पालन करती हूँ, नित्य शान्त समाधि करती हूँ। मैं ज्ञानामृत पिलाती हूँ, नित्य विष्णु-अर्थ शुद्ध सेवा में। है ज्ञान ही मेरा जीवन -धन, नित्य देश बेग़मपुर रहती हूँ। निज आनन्दस्वरूप ओम् हूँ मैं, जीवनमुक्ति मौज़ उड़ाती हूँ । सुन ज्ञान-बँसी बजाती हूँ, नित्य गोविन्द के गुण गाती हूँ। यह सृष्टि मेरा है गुलशन, खुद-मस्ती में नित्य रहती हूँ।

रियल लाइफ

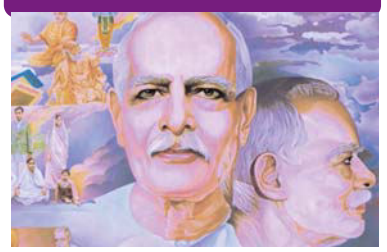

अतः वे विनम्र भाव से, हाथ जोड़कर पति से कहतीं -वआत्मन्! हम आपके और विश्व के कल्याण की कामना करती हैं और इस घर को वेश्यालय की बजाय शिवालय अथवा मन्दिर बनाना चाहती हैं। आप श्रीनारायण के समान देव -स्वभाव को धारण कीजिये और हम श्रीलक्ष्मी के समान देवी बनेंगी तो यह घर पावन तथा स्वर्ग-तुल्य हो जायेगा।

आर्य पुत्र! अब क्यों न हम अपनी पतित गृहस्थी को गृहस्थ-आश्रम अर्थात् आश्रम के समान पवित्र बनायें? देखो, आपसे हमारा प्यार कम नहीं हुआ है। हाँ, केवल हमारा इतना दृष्टिकोण अवश्य बदला है कि अब हमको आत्मिक-दृष्टि से देखती हैं और आपसे आत्मिक ही स्नेह करती हैं। आप भी परमपिता परमात्मा के अमर पुत्र हैं, हम भी प्रभु-पुत्री हैं। अतः आओ, उस परमपिता के साथ हम दोनों का जो नाता है, उस नाते को सामने रखकर, धर्म अर्थात् पवित्रता के मार्ग पर चलें। देखो, हम घर-गृहस्थ के सभी धर्मानुकूल कर्त्तव्यों को पहले से भी अधिक उत्तरदायित्व और परिश्रम से निभायेंगी, जो कार्य हमने पहले कभी नहीं किया था, वह भी हम करेंगी, यहाँ तक कि यदि आपको थूकना होगा तो हम पीकदान की बजाय अपने हाथ भी आगे करने के लिए संकोच नहीं करेंगी। परन्तु अब हम ज्ञान-गंगाओं को, शिव शक्ति यों को, ज्ञान-परियों को, प्रभू-पुत्रियों को स्वीकृति और सहयोग दो कि हम इस घर को पावन बनाये। इस पर लगे माया के दाग-धब्बों को धो डालें तथा मनोविकारों को राख कर दें। आप 'काम वासना' के लिये हमसे प्रस्ताव मत किया करो। अब प्रभू हमसे पवित्र रहने का प्रस्ताव कर रहे हैं क्योंकि अब कलियुग का अंत होने वाला है।

समय को पहचानो। हमारी बात मान लो, आप भी ज्ञानामृत का एक प्याला पीकर अपने भविष्य को उज्ज्वल बना लो। सहयोग दो कि हम अपने गृहस्थ को कमल-पुष्प के समान बनायें। हम आपसे केवल पवित्रता ही की भीख माँगती हैं। यह पवित्रता ही हम आत्माओं की प्यास है। हम आत्माओं ने अनेक जन्म विषय-विकारों में गोते लगाए हैं परन्तु हम ज्ञान-मीराओं को हम अब इस एक जनम के शेष थोड़े से समय के लिए तो पवित्र रहने दो क्योंकि हमने अब 'काम' को मन से निकाल कर श्याम को अथवा राम को उसमें बिठाया है। इसप्रकार, वे अपने-अपने पति को पवित्र बनने के लिए जो प्रेरणा देतीं, वह प्रेरणा इस गीत के सुरों में भरी है- जीवन की घड़ियाँ यों ही न खो, ज्ञानी बनो, योगी बनो। चादर न लम्बी तान के सो, पवित्र बनो, योगी बनो।

..क्रमश

गुलबर्गा के कुलपति एस. आर. निरंजन के विचार

750 में से किसी भी विश्वविद्यालय में अच्छा इन्सान बनाने की क्षमता नहीं

कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए एस. आर. निरंजन।

शिव आमंत्रण ■ गुलबर्गा

भारत देश में 750 विश्वविद्यालय है लेकिन किसी भी विश्वविद्यालय में एक अच्छा इन्सान बनाने की क्षमता नहीं है। लेकिन वह कार्य प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्वविद्यालय की बहनें कर रही है। उक्त विचार गुलबर्गा विश्वविद्यालय के कुलपति एस. आर. निरंजन ने व्यक्त किये। कर्नाटक के गुलबर्गा में न्यू डायमेनशन टू क्रिएट हार्मोनियस सोसाइटी विषय पर संस्थान के समाज सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में वह बोल रहे थे। उन्होंने कहा, वैसे लौकिक शिक्षा की कमी है तो भी आदमी भटक जाता है और समाज संरचना में सही मदद नहीं कर सकता। आज कायदे या कानून बहुत है लेकिन कोई भी कायदा या कानून किसी को एक अच्छा आदमी बना नहीं सकता। हमारे देश में आध्यात्मिकता का बल जबरदस्त है। वह इन्सान को शांति में रहना सिखाती है। अपना मन शांतपूर्ण, रचनात्मक और प्रभावी होना चाहिए और उसको समाज की संरचना के लिए उपयोग में लाना चाहिए। इसके लिए ब्रह्माकुमारीज़ का योगदान समाज के लिए अहम है। संस्थान जो बता रही है वह आप धारण करो, परिवार को धारण कराओ, पड़ोसियों को बताओ तो इस धरती पर स्वर्ग आने में देरी नहीं लगेगी। इस सम्मेलन का शुभारंभ कुलपति प्रोफेसर एस. आर. निरंजन, पूर्व इलेक्शन कमिश्नर लक्सन पटेल, प्रभाग के उपाध्यक्ष बीके अमीरचंद, राष्ट्रीय संयोजक बीके प्रेम, गुलबर्गा सबजोन प्रभारी बीके विजया समेत प्रभाग के वरिष्ठ पदाधिकारीयों ने दीप जलाकर किया। अंत में अतिथियों को बीके बहनों ने शॉल ओढ़ाकर व ईश्वरीय सौगात भेंटकर सम्मानित किया।

समाज सेवा प्रभाग की मीटिंग

दूसरे दिन आयोजित समाज सेवा प्रभाग की मीटिंग में प्रभाग के उपाध्यक्ष बीके अमीरचंद ने सेवा का विस्तार करने और समाज को व्यसनमुक्त करने पर अपने विचार व्यक्त किये। प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके प्रेम ने समाज सेवा का विस्तार करने के लिए महिने में एक बार बड़े सेवाकेन्द्र पर एक मीटिंग रखने का विचार व्यक्त किया। गुलबर्गा की सुप्रीटेंडेंट ऑफ पुलिस सविता हुगार ने ब्रह्माकुमारीज़ के कार्य की सराहना की और पीस आफ माइंड चैनल को कहा मन को शांति देने वाला चैनल।

मन को स्वच्छ व सकारात्मक बनाने की अत्यंत आवश्यकता

सुपर माईंड कार्यक्रम में ऊर्जा मंत्री पारस जैन के विचार

शिव आमंत्रण ■ उज्जैन

मध्यप्रदेश में उज्जैन के शिवदर्शन धाम हार्मनी हाल में श्रेष्ठ मन श्रेष्ठ भविष्य पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मन को सशक्त बनाने व उसमें छिपी अनंत शक्तियों को जाग्रत करने के उद्देश्य से आयोजित इस कार्यक्रम में ऊर्जा मंत्री पारस जैन ने अपनी शुभकामनायें व्यक्त करते हुये कहा कि आज के समय में मन को स्वच्छ व सकारात्मक बनाने की अत्यंत आवश्यकता है तथा सुपर माइंड – सुपर फ्युचर जैसे कार्यक्रम से निश्चित ही सभी का भविष्य उज्ज्वल बनेगा।

बीके शक्तिराज ने स्वागत भाषण में, मन निहित अनंत शक्तियों को फिर से जगाने के लिये विभिन्न विधियाँ बताई एवं सकारात्मक चिंतन करने की बात कही। उन्होंने कहा, जहाँ शारीरिक योग प्राणायाम–आसन आदि आवश्यक है उससे भी ज्यादा आवश्यक मन का योग अर्थात मन का शुद्धिकरण। राजयोग अर्थात मन को एकाग्र कर परमपिता परमात्मा में लगाना है। जिससे तनावमुक्ति होती है, मनोबल बढ़ता है, राग द्वेष समाप्त होते है।

सुपर माईंड कार्यक्रम का उद्घाटन करते ऊर्जा मंत्री पारस चंद्र जैन व अन्य अतिथि।

मुस्कुराने से पॉजीटीव एनर्जी जनरेट होती है। नकारात्मक विचार बीमारी देते हैं। मनुष्य को अपने विचारों की संख्या को कम कर समर्थ विचारों की ओर ध्यान देना चाहिए।

मुस्कुराना सीखिये

यदि आप क्रोध करते है तो केंसर को, ईर्ष्या के विचार है तो अल्सर को, घमण्ड अहंकार से सर्वाईकल को आमंत्रित करते है। अत: मुस्कुराना सीखिए, अच्छे विचार रखिए, क्षमा भाव रखिए। मुस्कुराना सीख जाए तो हेल्थ इन्श्योरेन्स नहीं कराना पड़ेगा। जिस से भी मिले मुस्कुराकर मिले जिससे आपके हैप्पीनेस की चैनल बढ़ती जाएगी। इस अवसर पर सैकड़ो की तादाद में श्रोतागण उपस्थित थे, नगर के गणमान्य नागरिक, राजनितिज्ञ, एडवोकेट, चिकित्सक, शिक्षाविद्, युवा स्टूडेन्टस, साहित्यकार, प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ ऊर्जा मंत्री पारस चन्द्र जैन, अंतराष्ट्रीय माइंड व मेमोरी मैनंजमेंट के युवा ट्रेनर शक्तिराज सिंह, दिनेश त्रिपाठी (संतमीरा कान्वेट स्कूल), डॉ. विमल गर्ग, एम. एस. रावत उप जेल अधिक्षक, राजयोगिनी उषा दीदी ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया । दिन के समय विक्रम विश्वविद्यालय, प्रशान्ती कॉलेज एवं सेन्ट्रल जेल में भी प्रोगाम किया।

तनाव का मुख्य कारण बन रहा है सोशल मीडिया

शिव आमंत्रण, बिलासपुर। जीवन में इंटरनेट, मोबाइल और सोशल मीडिया का अधिक प्रयोग तनाव का मुख्य कारण बना हुआ है। इनमें सकारात्मक बातें तो होती हैं किन्तु नकारात्मक या व्यर्थ विचारों को उत्पन्न करने वाले तथ्यों व समाचारों की अधिकता होती है क्योंकि आज का वातावरण ही नकारात्मक है जिसका सीधा प्रभाव हमारे मन पर पड़ता है और इन बातों में उलझकर हमसे व्यर्थ कर्म होने लगते हैं। उक्त बातें छत्तीसगढ़ के बिलासपुर स्थित एनटीपीसी सीपत में सीआईएसएफ के जवानों के लिए आयोजित स्ट्रेस मैनेजमेन्ट रिट्रीट में सिक्यूरिटी सर्विस विंग के मुख्य वक्ता कमाण्डर बीके शिव सिंह ने कही। आध्यात्मिकता कोई धर्म नहीं है, स्वयं को व स्वयं में निहित शक्तियों को पहचानना ही आध्यात्मिकता है। हर व्यक्ति व परिस्थिति के बारे में हम कैसे अच्छा सोचें यह आध्यात्म ही हमें सिखाता है। इसका अच्छा प्रभाव यह पड़ता है कि हमारे मन की शक्ति बढ़ जाती है। तनावमुक्ति के लिए हमें कर्मसिद्धान्त का भी पता होना जरूरी है कि जैसा हमारा कर्म होता है वह वैसे ही हमारे तक पहुंच जाता है। अच्छे कर्मों का परिणाम अच्छा और बुरे कर्म का परिणाम बुरा। प्रथम सूत्र मे टिकरापारा सेवाकेंद्र संचालिका बीके मंजू ने हर हाल में मुस्कुराते को कहा।

लोक लाज, भय और निन्दा की परीक्षाओं से पार होना

इस प्रकार, बहुत नर-नारी ज्ञानामृत पीते, अच्छे नियमों का पालन करते, अपने जीवन का कल्याण कर रहे थे। परन्तु ऐसा हुआ कि कई माताओं के पति जो कि अपने व्यापार के सिलसिले में कुछ काल के लिए विलायत में गए थे, अब जब वापस लौटे तो उन्होंने भोग-विलास की कामना की। विषय विकारों के प्यासे पति अपनी काम-चेष्टा पूरी न होने के कारण अबला नारीयों पर अत्याचार करने लगे। वे उन्हें 'ओम् मण्डली' में जाने और ज्ञानामृत पीने से रोकने लगे। परन्तु जिन्होंने इतने समय से ज्ञानामृत पीकर अपने जीवन को पावन बनाया था, अब वे शक्तिमय आत्माएँ अपने ऊपर काम-कटारी कैसे चलाने दे सकती थीं? वे अमृत पीये बिना कैसे रह सकती थी? जिन्हें यह निश्चय हो चुका था कि अब परमपिता परमात्मा पवित्र, सतोप्रधान सृष्टि की पुनर्स्थापना करना चाहते हैं और हमें अब आसुरी कर्म छोड़ देवी-देवता बनना है, वे आत्मा का हनन करने वाले इस हलाहल विष का कैसे सेवन कर सकती थी? वे तो अब ज्ञान की मस्ती में निम्नलिखित गीत गाया करती थी- मैं क्षेत्र-नगर की शक्ति हूँ, और ओम् मण्डली में रहती हूँ। स्वधर्म का पालन करती हूँ, नित्य शान्त समाधि करती हूँ। मैं ज्ञानामृत पिलाती हूँ, नित्य विष्णु-अर्थ शुद्ध सेवा में। है ज्ञान ही मेरा जीवन -धन, नित्य देश बेग़मपुर रहती हूँ। निज आनन्दस्वरूप ओम् हूँ मैं, जीवनमुक्ति मौज़ उड़ाती हूँ । सुन ज्ञान-बँसी बजाती हूँ, नित्य गोविन्द के गुण गाती हूँ। यह सृष्टि मेरा है गुलशन, खुद-मस्ती में नित्य रहती हूँ।

रियल लाइफ

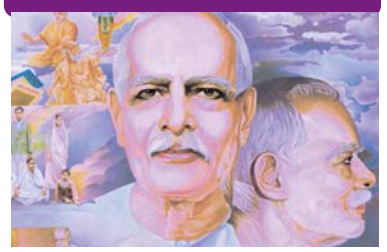

अतः वे विनम्र भाव से, हाथ जोड़कर पति से कहतीं -वआत्मन्! हम आपके और विश्व के कल्याण की कामना करती हैं और इस घर को वेश्यालय की बजाय शिवालय अथवा मन्दिर बनाना चाहती हैं। आप श्रीनारायण के समान देव -स्वभाव को धारण कीजिये और हम श्रीलक्ष्मी के समान देवी बनेंगी तो यह घर पावन तथा स्वर्ग-तुल्य हो जायेगा।

आर्य पुत्र! अब क्यों न हम अपनी पतित गृहस्थी को गृहस्थ-आश्रम अर्थात् आश्रम के समान पवित्र बनायें? देखो, आपसे हमारा प्यार कम नहीं हुआ है। हाँ, केवल हमारा इतना दृष्टिकोण अवश्य बदला है कि अब हमको आत्मिक-दृष्टि से देखती हैं और आपसे आत्मिक ही स्नेह करती हैं। आप भी परमपिता परमात्मा के अमर पुत्र हैं, हम भी प्रभु-पुत्री हैं। अतः आओ, उस परमपिता के साथ हम दोनों का जो नाता है, उस नाते को सामने रखकर, धर्म अर्थात् पवित्रता के मार्ग पर चलें। देखो, हम घर-गृहस्थ के सभी धर्मानुकूल कर्त्तव्यों को पहले से भी अधिक उत्तरदायित्व और परिश्रम से निभायेंगी, जो कार्य हमने पहले कभी नहीं किया था, वह भी हम करेंगी, यहाँ तक कि यदि आपको थूकना होगा तो हम पीकदान की बजाय अपने हाथ भी आगे करने के लिए संकोच नहीं करेंगी। परन्तु अब हम ज्ञान-गंगाओं को, शिव शक्ति यों को, ज्ञान-परियों को, प्रभू-पुत्रियों को स्वीकृति और सहयोग दो कि हम इस घर को पावन बनाये। इस पर लगे माया के दाग-धब्बों को धो डालें तथा मनोविकारों को राख कर दें। आप 'काम वासना' के लिये हमसे प्रस्ताव मत किया करो। अब प्रभू हमसे पवित्र रहने का प्रस्ताव कर रहे हैं क्योंकि अब कलियुग का अंत होने वाला है।

समय को पहचानो। हमारी बात मान लो, आप भी ज्ञानामृत का एक प्याला पीकर अपने भविष्य को उज्ज्वल बना लो। सहयोग दो कि हम अपने गृहस्थ को कमल-पुष्प के समान बनायें। हम आपसे केवल पवित्रता ही की भीख माँगती हैं। यह पवित्रता ही हम आत्माओं की प्यास है। हम आत्माओं ने अनेक जन्म विषय-विकारों में गोते लगाए हैं परन्तु हम ज्ञान-मीराओं को हम अब इस एक जनम के शेष थोड़े से समय के लिए तो पवित्र रहने दो क्योंकि हमने अब 'काम' को मन से निकाल कर श्याम को अथवा राम को उसमें बिठाया है। इसप्रकार, वे अपने-अपने पति को पवित्र बनने के लिए जो प्रेरणा देतीं, वह प्रेरणा इस गीत के सुरों में भरी है- जीवन की घड़ियाँ यों ही न खो, ज्ञानी बनो, योगी बनो। चादर न लम्बी तान के सो, पवित्र बनो, योगी बनो।

..क्रमश

व्यर्थ चिंतन का फायदा नहीं

खुशी को अब हम एक नये अंदाज से देख रहे हैं। खुशी अर्थात् तृप्ति, स्थिरता। जब हमने उन कारणों को देखना शुरू किया जो हमारी खुशी के स्तर को अस्थिर या ऊपर-नीचे करते हैं तो ऐसी बहुत सी बातें सामने आई जिसे हम स्वभाविक मान रहे थे और ऐसा लगता था कि जैसे इन पर हमारा कोई नियंत्रण ही नहीं है। अब समझ में आ रहा है कि नियंत्रण करने की शक्ति मेरे अपने हाथ में है। वास्तव में किसी भी समय मुझे यह पता चल जाये कि ये वो कारण हैं जो खुशी को कहीं न कहीं मुझसे दूर कर रहे थे या मैं निर्मित नहीं कर पा रहा था,तो अब मैं कर सकता हूँ। जैसे ही मुश्किल सामने आती है तो उसका समाधान भी तुरन्त मिल जाता है। इस अंक में आज हम कुछ और कारणों के बारे में ब्रह्माकुमारी शिवानी से चर्चा करेंगे।

कनुप्रिया :- ब्रह्माकुमारी शिवानी, बीते हुए समय के बारे में हमने पिछली बातचीत में जो देखा, जो समझा उसे हमने प्रयास भी किया। मैं कहीं जा रहीं थी और दो घंटे के लिए यातायात जाम में फंस गयी। उस समय हमनें महसूस किया कि हम जो भी बात कर रहे थे वो या तो अतीत से जुड़ी हुई थी या फिर आने वाले कल से। उसका हम विश्लेषण कर रहे थे, उसको देख रहे थे या कुछ न कुछ हम आने वाले समय की बात करने की कोशिश कर रहे थे कि क्या करेंगे, कैसे करेंगे। उस समय मैंने यह कोशिश किया और उनसे यह कहा भी कि शांति से बैठो और वर्तमान को देखो। जब हम वर्तमान में आये तो सामने यातायात दिख रहा था। यह हमारा कैसा वर्तमान है इस पर मैं थोड़ी सी बात करना चाहूंगी।

जीवन प्रबंधन

बीके शिवानीः- यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि हम वर्तमान में रहे। अब देखना है कि उस समय हमारे मन कि स्थिति क्या थी। होता क्या है कि जैसे ही हम बीते हुए समय या आने वाले समय के बारे में सोचते हैं तो सबसे पहले हम सोचते हैं कि क्या करना है, फिर उसके बाद उस पर तर्क देकर चर्चा करते हैं। उस समय आप देखेगें कि आपकी मन की स्थिति ऊपर-निचे होने लगती है। अतीत की यदि कोई अप्रिय घटना के बारे में हम सोचते हैं तो उसके साथ दुःख-दर्द, क्रोध भी आने लगता है, फिर हमारी आलोचना होने लगती है। मेरे साथ क्या होगा तो मैं उसे पसंद करूंगी। भविष्य में हम आशा करेंगे कि ये होगा तो खुश होंगे, फिर भय आयेगा, हो सकता है कि ऐसा न हो, ये जो बहुत सारी भावनायें मिलकर हमें अस्थिर कर देती है और ये स्वतः ही होता है। जब हम वर्तमान समय में होते हैं तो हमें भविष्य के बारे में बात नहीं करनी चाहिए। मान लो कि अगर आप बात कर भी रहे हो कि कल हमें सारा दिन में क्या-क्या करना है लेकिन साथ-साथ हमें यह ध्यान रखना पड़ेगा कि अगर ऐसा नहीं हुआ तो मैं दुःखी नहीं होऊंगी क्योंकि मैं अभी भी खुश हूँ इसके लिए मुझे भविष्य में देखने की आवश्यकता नहीं है। हम अपने मन को शर्तों में बाँध देते हैं कि जब ये होगा न तो हम खुश होगें, तो हमारा मन भी वो योजना कर लेता है और इंतजार करता है कि जब ये होगा तो मैं खुश होऊंगा। जहाँ निर्भरता हो गयी तो उसके साथ-साथ अन्य चीजें भी आ जाती है।

इसमें महत्वपूर्ण यह है कि हम अपने मन को देखते रहें कि ये खुश है कि नहीं लेकिन साथ-साथ यह भी याद रखें कि हमारी खुशी किसी चीज पर निर्भर नहीं है।

कनुप्रियाः- अभी हमें ये देखने की जरूरत है कि वर्तमान में परिस्थिति क्या है, मेरी मानसिक स्थिति कैसी है, फिर मैं अतीत का विश्लेषण भी कर सकती हूँ और भविष्य के संबंध में मेरी जो योजना है उसे पूरी होने की आशा भी की जा सकती है।

बीके शिवानीः- ध्यान रखो कि जो सारा कुछ हो रहा है, मान लो अतीत में भी जो कुछ हम किसी दुःख के बारे में चर्चा कर रहे हैं कि उन्होने मुझे ऐसा कहा, उन्होंने मेरे साथ ऐसा क्यों किया तो मैं उसको सही करने की कोशिश करती हूँ कि मुझे ऐसा लगता है कि मैं सही हूँ। मुझे खुश रहने के लिए अपने ऊपर काम करना है, हमें स्थिर रहना है। यदि मैं स्थिर नहीं रहती हूँ इसके लिए मैं किसी को दोषी नहीं ठहरा सकती हूँ। अक्सर क्या होता है कि हम किसी भी घटना के लिए दूसरों को जिम्मेदार ठहराते हैं और इस संबंध में बहुत वाद-विवाद भी करते हैं। मैं स्वयं ही सक्षम हूँ, मैं ठीक हूँ, मैं स्थिर हूँ, मुझे किसी की जरूरत नहीं है, क्योंकि अब मैं अब मैं अपने दर्द के लिए उनको जिम्मेवार नहीं ठहराऊंगी। मुझे ये पता है कि मैंने ये किया है, मैने ये निर्मित किया है, तो मुझे ही खत्म करना पड़ेगा। तब हम स्थिर रह सकते हैं। तर्क करने का परिणाम क्या होगा? हम चर्चा इसलिए करते है कि हम अच्छा अनुभव कर सकें। चलो मेरे साथ कुछ हुआ तो हम अन्य लोगों से बात कर लें। बात करने से क्या होगा और बात भी किस प्रकार की करेंगे कि आपको पता है उन्होंने क्या किया, उन्होंने क्या बोला, उन्होंने ये किया, उन्होंने ऐसा किया। फिर आप ऊपर से बोलेंगे अच्छा उन्होंने ऐसा किया, उनको आपके साथ ऐसा नहीं करना चाहिए था।

कनुप्रियाः- यदि मैं दो घण्टे आपके साथ हूँ तो मैं दो घण्टे में क्या बात करूंगी?

बीके शिवानीः- अगर आपको अतीत से कोई बात सीखनी भी हो तो उसमें कुछ सकारात्मक बातें सीखो, व्यर्थ चिन्तन करने से कोई फायदा नहीं है उल्टा हमारा ही नुकसान होता है। मेरा पूरा ध्यान इस पर केन्द्रित होना चाहिए कि मुझे जीवन में कैसे आगे बढ़ना है, हमारे व्यक्ति त्व का विकास कैसे हो, तो उससे क्या होगा? आप सशक्त होते जायेंगे फिर आपकी जो बात-चीत होगी वो दूसरे को फोन करके या दूसरे से बात करते हुए घंटों-घंटों उनकी अपनी वो आपबीती सुनाते रहते हैं कि कहाँ लोगों ने हमें धोखा दिया और हम कर क्या रहे हैं, अपना दर्द हम दूसरों को भी दे रहे हैं। पहले ही सामने वाले के पास बाँटने के लिए बहुत सारी समस्याएं है फिर क्या होता है, हम दुःख-दर्द के बारे में बात-चीत करते-करते हम दर्द में चले जाते हैं। हम बीते हुए समय की बातों को वर्तमान में ले आयें, फिर उस पर बात-चीत की तो वो और भी पक्का हो गया, फिर हम अगले दिन इस पर बात करेंगे तो ये और भी पक्का हो जायेगा। इससे क्या होगा कि मेरा हर दिन दर्द में बीतता जायेगा। फिर दर्द में ही रहने का मेरा संस्कार बनता जाता है। इसलिए हमें केवल उस सकारात्मकता पर ही ध्यान देना है जो मुझे अपने जीवन में लानी है।

....क्रमश

आंतरिक व्यक्तित्व को बनाएं सुंदर

समस्या-समाधान

प्रश्न : आन्तरिक व्यक्तित्व सुन्दर बनाने में आध्यात्मिकता का क्या योगदान है, कैसे हम हर जगह सफलता दर्ज करे?

उत्तरः आध्यात्मिक व्यक्ति की स्प्रीचुअलिटी सुबह से प्रारम्भ हो जाती है। उठते ही योगाभ्यास करते हैं, अर्न्तमन को अच्छे-अच्छे सकंल्प देते हैं। खुशनुमा जीवन जीने का तरीका सीख लेते हैं। इससे हमारे सभी से सम्बन्ध अच्छे होते जाते हैं, अन्दर साहस, हिम्मत, आत्मविश्वास, मनोबल इनमें बहुत ज्यादा वृद्धि हो जाती है। स्प्रीचुअलिटी का अर्थ ही है आत्मा को प्यूरीफाई करना, परमात्मा से कनेक्शन जोड़ना, उसकी शक्तियां स्वयं में भरना और जो मोरल वैल्युज हैं उसके साथ जीवन जीना, ये स्प्रीचुअलिटी है। तो स्प्रीचुअलिटी पर चलने वाले व्यक्ति की पर्सनैलिटी हमेशा सुन्दर, सुलझी हुई तथा आर्कषक रहती है इसलिए वह हर जगह सफल होता जाता है।

प्रश्न : राजयोग का अभ्यास कहां-कहां किया जाए, कहां-कहां नहीं किया जाए?

उत्तरः किसी को जॉब लेनी है, किसी को अच्छे अंक लाने हैं, किसी सर्विस में अच्छे प्रमोशन लेने हैं और सफलता का जो फील्ड है मनुष्य को हर जगह सफलता चाहिए उसमें राजयोग का प्रयोग काफी कारगार सिद्ध होता है। पारिवारिक जीवन है उसमें कुछ समस्यायें चल रही हैं किसी की प्रोपर्टी की समस्याएं चल रही है, किसी की कोर्ट केस की समस्या चल रही है, जिनको हम विघ्न कहते हैं परिवारों में, उसमें राजयोग के प्रयोग बहुत ज्यादा सफल होते हैं। बीमारियां चल रही हैं जिसको असाध्य रोग कहते हैं, नींद नहीं आ रही है, कैंसर जैसा हो गया है उसमें राजयोग का प्रयोग बहुत ज्यादा मदद करता है। मन को एकाग्र करने के लिए, जीवन को प्युरिफाई करने के लिए, जीवन में सफलता पाने, विघ्नों को समाप्त करने के लिए, निरोगी जीवन बनाने के लिए, पारिवारिक संबंधो में मधुरता लाने के लिए, विशेष रूप से इन सब में राजयोग की शक्ति विशेष काम करती है।

प्रश्न : एक समय था जब हमारे पास सब कुछ था अपना घर, परिवार, कारोबार, इज्जत, रूतबा, पर आज कुछ नहीं है। सन् 2000 में मैने मकान बनाया, लोन उठाया था। बहुत बुरे दौर से गुजर रहा हूं, कर्जे में दबा हूँ, जिनसे कर्ज लिया, उसे मैं ईज्जत के साथ वापस देना चाहता हूँ परन्तु चिंता है, चाह कर भी नहीं दे पा रहा हूँ। किसी भी काम में मुझे सफलता भी प्राप्त नहीं हो रही है। कृपया बतायें कि मैं क्या करूं।

उत्तरः ऐसे में योग का प्रयोग बहुत ही सफल हो जाता है। विघ्न भी अचानक या बिना कारण नहीं आते। पूर्व जन्मों का निगेटिव कर्मों का जो खाता है वो सामने आ गया है। इसलिए कहीं भी सफलता नहीं मिल रही है इन्हें ऐसा लगता होगा कि चारों ओर से द्वार बंद हो गये हैं। मैं इनकी भावना को सपोर्ट करूंगा, जिनसे ये लिया हुआ है वो सम्मान सहित लौटा देना चाहते हैं क्योंकि मनुष्य की नियत यदि साफ होती है, देने की होती है तो आने लगता है सब कुछ। और यदि मन के कोने में ये भाव रहता है कि नहीं देना है, ऐसे बहुत लोग संसार में हैं जो ऐसे भाव रखते हैं कि नहीं देना है। बहुत थोड़े ऐसे अच्छे लोग होते हैं जो कहते हैं कि हमें भले ही कष्ट हो हम सबका देगें। उन्होंने हमें प्यार से दिया है हम भी उन्हें प्यार से लौटायेंगे। उन्होंने आवश्यकता में हमारी मदद की हम भी उनका वापस लौटा देंगे। ये तो बहुत अच्छी चीज है। इन्हें दो काम करने हैं एक तो ऐसे पुण्य रोज करने है जिससे दूसरों की दुआएं मिले। ऐसा कोई कर्म न हो जो किसी की बद्दुआ मिले। दूसरा इनको एक विघ्न- विनाशक भट्टी करनी है 21 दिन और ये संकल्प करें, मैं मास्टर सर्वशक्ति वान हूँ, विघ्न-विनाशक हूँ ये स्वमान हैं हमारे बहुत सुन्दर, इन्हें पांच बार याद करके फिर एक घण्टा राजयोग करें और ये संकल्प करें कि हमारे परिवार या जीवन पर जो विघ्न आये हुए हैं ये सभी समाप्त हो जाएगें । एक इस योग कि शक्ति से वो जो विकर्म सामने आ गए है जो विघ्नों को जन्म दे रहे हैं वो विघ्नों की दीवार टूटेगी। विकर्म नष्ट होंगे विघ्नों कि दीवार टूटेगी और इन्हें रोशनी मिलती चली जाएगी। दूसरी चीज, सवेरे उठते ही अंर्तमन में संकल्प दें जैसे - मैं बहुत भाग्यवान हूँ, मैं बहुत सुखी हूँ, मैं बहुत धनवान हूँ, मैं कर्ज मुक्त हूँ। मेरे साथ तो स्वयं भगवान है वे सब मार्ग अपने आप खोल देगें बहुत ही सच्चे मन से इसे पांच बार करेंगे तो जो बाधायें आ रही हैं, ब्लॉकेज हो गये हैं पैसा आने में जो रूकाट है वो सब समाप्त हो जायेंगे। हमें पूर्ण विश्वास है ये सब आपका साथ दे सकेंगे और इनका जीवन भी सुखी हो सकेगा।

प्रश्न : जो पशु पक्षी और जीव-जन्तु हैं, जंगलों में रहते हैं, हमारे आसपास रहते हैं वे मृत्यु के बाद कहाँ जाते हैं क्या इनका निवास स्थान परमधाम है, क्या ये भी जन्म मरण के चक्कर में आती हैं?

उत्तरः परमधाम सभी आत्माओं का निवास स्थान है ही तथा हर मृत्यु के बाद पूर्ण जन्म होता है लेकिन जब चारों युगों का अन्त होता है और महाविनाश होता है तब ये जीव-जन्तुओं की आत्मायें भी ऊपर ही चली जाती हैं। परमधाम में बहुत सारे सेक्सन हैं, शास्त्रों में जिन्हें बहुत सारे लोक कह दिए है। परमपिता परमात्मा सबसे ऊपर, फिर अच्छी आत्मायें जैसे-जैसे लेवल है आत्माओं का। पशु- पक्षियों की आत्मायें नीचे निवास करती हैं और अपने समय पर पुनः इस धरा पर अवतरित होती हैं। ये भी जन्म-मरण के चक्कर में आती हैं। मनुष्य पर ही ये पूरी सृष्टि आधारित रहती है। जो स्थिति मनुष्य की, जो स्वरूप मनुष्य का, जो चक्र मनुष्य का वही सब इनका भी चलता है।

प्रश्न : कई बार ये देखा जाता है कुछ कुत्ते कार में घुमते हुए दिखाई देते हैं, कुछ हैं जो सड़क के किनारे भोजन की तलाश में भटकते रहते हैं यहां उनके कर्मों का क्या हिसाब किताब है?

उत्तर : जानवर भी कर्म करते हैं। एक कुत्ता है जो मालिक को बहुत सुख देता है जिसके पास रहता है बिल्कुल विश्वासपूर्ण रहता है। दूसरे कुत्ते हैं जो चलते हुए राहगीर को काट लेते हैं किसी की चीज खा पी लेते हैं। तो ये छोटे-छोटे कर्म विकर्म बनकर उनको भी छोटी-छोटी सजाओं की अनुभुति कराते हैं। बाकी कर्म के बिना किसी को कुछ नहीं मिलता है। जब मनुष्य किसी भी जानवर को मारते हैं, काटते हैं तो जानवर को बहुत कष्ट तो होता ही है तो उसके कष्ट का रिवर्स, उनके वायब्रेशन उस व्यक्ति को अवश्य आते हैं। मुर्गों को लोग मार कर खा रहे हैं उसका रिर्टन उनको अवश्य आता है। लेकिन हम सभी को इन चीजों से ऊपर उठ जाना चाहिए। आजकल के सभ्य कहलाने वाले लोग ट्रेन में, प्लेन में नॉनवेज़ ही खाते हैं इसको अपनी शान समझते हैं। ये तो सरकार का कार्य है, प्रचारक जो अच्छे हैं, हमारी संस्था भी इसका प्रचार करती है, उनका ये कर्तव्य है संसार में ऐसी लहर फैलाएँ कि इन सबसे लोग मुक्त रहें। जीवों को भी कष्ट न हो संसार में प्यार के वायब्रेशन फैलें।

सूचना

सामाजिक सेवाओं तथा आन्तरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक शिव आमंत्रण समाचार पत्र एक सम्पूर्ण अखबार है। जिससे आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है। यही हमारी ताकत है।

वार्षिक मूल्य	:	90 रूपये
तीन वर्ष	:	260 रूपये
आजीवन	:	2200 रूपये

पत्र व्यवहार का पता

संपादकः ब्र.कु. कोमल, ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया एवं पब्लिक रिलेशन ऑफिस, शांतिवन-307510 , आबू रोड- 307510, जिला-सिरोही, राजस्थान

मो.8769830661, 9413384884

Email: shivamantran@bkivv.org, bkkomal@gmail.com

संयमित जीवन से ही दूसरों को कर सकते हैं अनुशासित

स्कूल, कॉलेज एवं विश्व विद्यालयों के शिक्षकों, प्राचार्यों एवं प्रशासकों के लिए स्नेह मिलन कार्यक्रम

कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षा ज'त की विशेष विभूतियां।

शिव आमंत्रण ■ गुरुग्राम

ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेन्टर द्वारा स्कूल, कॉलेज एवं विश्व-विद्यालयों के शिक्षकों, प्राचार्यों एवं प्रशासकों के लिए क्रिएटिंग गुडनेस विषय पर स्नेह मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में बोलते हुए वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका बीके शिवानी ने बताया, कि शिक्षकों पर वास्तव में बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। एक शिक्षक ही देश के भविष्य को सही दिशा दे सकता है। उन्होंने कहा, कि शिक्षकों को पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों को भावनात्मक रूप से भी शक्तिशाली बनाने की जरूरत है। एक शक्तिशाली मन ही परिस्थितियों का सामना कर सकता है। उन्होंने कहा कि अगर हम बच्चों को अनुशासित करना चाहते हैं, तो उसके लिए खुद में संयम बहुत जरूरी है। बहन शिवानी ने कहा, कि हमें स्वयं पर विश्वास होना चाहिए। दूसरे हमारे बारे में जो कुछ भी कहते हैं वो उनका अपना नज़रियां है।

हम अपने बारे में बेहतर जानते हैं। उन्होंने कहा, कि हमें सदैव सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना है। हम अगर दूसरों की कमजोरियों का चिन्तन करते हैं, तो कुछ समय बाद वो हमारे चित का हिस्सा बन जाती हैं। उन्होंने कहा कि हमें मूल्यों को सदैव प्रोत्साहित करना है। हम सिर्फ बच्चों को किताबी शिक्षा ही नहीं सिखाते बल्कि अपने आचरण से भी बहुत कुछ सिखाते हैं।

ओआरसी की निदेशिका बीके आशा ने संबोधन में कहा, कि श्रेष्ठ जीवन बनाने के लिए श्रेष्ठ विचार जरूरी हैं। उन्होंने कहा, कि वर्तमान समय संबंन्धों में कटुता का मूल कारण अहंकार है। अहंकार के कारण लोग एक-दूसरे के आगे झुकने को तैयार नहीं हैं। जीवन में अगर सुख एवं शान्ति से रहना है तो हमें दूसरों की दुआएं लेना बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा, कि अपने बुजुर्गों का सम्मान करना हमारे देश की महान परम्परा रही है। बुजुर्ग व्यक्ति उस छायादार वृक्ष के समान हैं, जिससे निरन्तर शीतल छाया प्राप्त होती है।

अपना दृष्टिकोण बदलें

भिवाड़ी से आए डॉ. रूप सिंह ने कहा, कि खुशनुमा जीवन बनाने के लिए हमें अपने दृष्टिकोण में बदलाव की आवश्यकता है। उन्होंने कहा, कि खुश रहने से लाइलाज बीमारियां भी ठीक हो जाती हैं। हमारा जीवन एक संगीत है, इसमें हम जैसी थाप देंगे, वैसी ही धुन बजेगी। उन्होंने कहा, कि योग ही वास्तव में मुख्य पद्धति है, बाकी सब तो वैकल्पिक पद्धतियां हैं। शुरूआत मे बीके ख्याति ने सभी को संस्था का परिचय देते हुए, कार्यक्रम के उद्देश्य को स्पष्ट किया। बीके विधार्ती ने एक्टिविटीज़ द्वारा आपसी संबन्धो का महत्व समझाया। कार्यक्रम का संचालन बीके दिव्या ने किया। कार्यक्रम में 400 से भी अधिक शिक्षा जगत की विशेष हस्तियों ने शिरकत की।

'नैतिक कर्तव्य जिम्मेदारी से करे तो स्वच्छ भारत अभियान सफल होगा'

शिव आमंत्रण, नाशिक। स्वच्छ भारत अभियान के तहत नासिक में महानगरपालिका द्वारा स्वच्छ नासिक-सुंदर नासिक अभियान का आयोजन हुआ जिसमें ब्रह्माकुमारीज़ के नासिक सेवाकेंद्र की बीके वासंती के नेतृत्व में कई बीके सदस्यों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इस अभियान का शुभारंभ पालक मंत्री गिरीश महाजन, महापौर रंजनाताई भांसी, उप महापौर प्रथमेस गीते, सासंद हेमंत गोडसे, हरीशचंद्र चव्हाण समेत प्रशासन के कई अधिकारियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में पालक मंत्री गिरीश महाजन ने प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा चलाये जा रहे स्वच्छ भारत अभियान की प्रशंसा करते हुए कहा, घर और समाज को स्वच्छ रखना देश के प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य है। अगर हम अपने नैतिक कर्तव्य को जिम्मेदारी से करें तो स्वच्छ भारत अभियान को सफल बना सकते हैं।

देश के किसानों की दशा में होगा सुधार

किसान सशक्तिकरण अभियान में राज्यमंत्री श्रीमती कृष्णेन्द्र कौर के विचार

शिव आमंत्रण, भरतपुर। राजस्थान सरकार की पर्यटन, कला एवं संस्कृति राज्यमंत्री कृष्णेन्द्र कौर 'दीपा' ने कहा, कि भरतपुर राजस्थान का कृषि प्रधान जिला है। सरसों उत्पादन के लिए पूरे देश में अग्रणी है। आज हमारा देश अन्न के क्षेत्र में स्वावलम्बी है परन्तु ऐसी नई तकनीक विकसित होना आवश्यक था जिससे कृषि पौष्टिकता एवं गुणवत्ता से सम्पन्न बन सकें। धरती की उर्वरकता बढ़ाकर रसायनिक खादों एवं कीटनाशकों का प्रयोग कम हो सके। ऐसे ही उद्देश्य को लेकर संस्थान ने यह अभियान निकाला है। मुझे पूर्ण विश्वास है इस अभियान से देश के किसानों की

हरी झंडी दिखाकर रैली की रवानगी करती राज्यमंत्री कृष्णेंद्र कौर।

दशा में सुधार होगा। राजस्थान के भरतपुर में किसान सशक्तिकरण अभियान के पहुंचने पर कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसके शुभारंभ अवसर पर पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग की राज्यमंत्री कृष्णेंद्र कौर दीपा, अतिरिक्त जिला कलेक्टर ओ.पी. जैन, सरसों अनुसंधान निदेशक डॉ. प्रमोद कुमार राय, कृषि महाविद्यालय कुम्हेर के डीन डॉ. अमर सिंह, संतोष कुमार मीना, कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की क्षेत्रिय संयोजिका बीके सरोज, भरतपुर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके कविता एवं संस्थान के अन्य बीके सदस्यों समेत अनेक लोग मौजूद थे। ओ. पी. जैन ने संस्थान द्वारा की जा रही सेवाओं की सराहना की। बीके सरोज ने कहा कि आज तक हम जिस प्रकार से भी खेती करते आए उसका प्रत्यक्ष प्रमाण लोगों में बढ़ रही बीमारी व तनाव के रूप में हमारे सामने है। उसी प्रकार हम हर पल एक खेती और करते हैं वो है, कर्मों की खेती। इसलिए हमें दोनों प्रकार की खेती पर बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है। साथ ही अभियान के सदस्यों ने सभी को शाश्वत यौगिक खेती से अवगत कराया। अंत में लोगों की जागरूकता के लिए नगर में रैली निकाली गई जिसे कृष्णेंद्र कौर दीपा ने हरी झंडी दिखाकर रवानगी दी।

राष्ट्रीय समाचार

राजयोग साधना से जीवन खुशियों से भर जायेगा

शिविर में कैंडल हाथ में लेकर एकाग्रता का अभ्यास करते प्रतिभागी।

शिव आमंत्रण, शहादा। वर्तमान समय हर व्यक्ति किसी न किसी प्रकार के तनाव में है। वह क्षणभर की खुशी के लिये तरह-तरह के उपाय कर रहा है, लेकिन फिर भी उसे वास्तविक खुशी व शांति की अनुभूति नहीं हो पा रही है। ऐसी स्थिति में राजयोग मेडीटेशन का अभ्यास किया जाए तो जीवन निश्चित ही खुशियों से भर जायेगा व तनाव जैसी असाध्य बीमारियों से बचा जा सकता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये महाराष्ट्र के शहादा में हीलिंग टच विषय पर कार्यक्रम एवं दो दिवसीय राजयोग मेडीटेशन शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में बीके पुनीत ने मिनरल वाटर मेडिटेशन फॉर पॉवर, साल्टेड वाटर टू रिमूव निगेटिविटी एवं हैंड टू हैंड मेडिटेशन फॉर बूस्ट अवर रिलेशनशिप जैसे अनेक विषयों पर चर्चा की। कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने कैंडल्स जलाकर जीवन में ज्ञान प्रकाश बना रहे, ऐसी कामना की। वहीं बच्चों ने सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुत कर सभी का स्वागत किया। ऐसे ही महात्मा गांधी सभाग्रह में कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें बीके पुनीत ने राष्ट्रीय सेवा योजना कैंप में आये छात्र - छात्राओं का मार्गदर्शन किया एवं राजयोग मेडीटेशन का अभ्यास कराया।

'थोड़ा समय खुद को देना भी जरूरी'

एचपीसीएल कर्मचारियों के साथ बीके राजेश और अन्य अतिथि।

शिव आमंत्रण, गाजियाबाद। गाजियाबाद के लैमन ट्री बेंक्विट में एचपीसीएल कंपनी द्वारा कर्मचारियों व अधिकारियों के लिए एथिक्स विषय पर आयोजित कार्यशाला में वसुंधरा सेवाकेंद्र की बीके राजेश को व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला में बीके राजेश ने राजयोग मेडिटेशन का महत्व बताते हुये कहा, कि जीवन में सफल होने के लिये हमें संतोष, आपसी स्नेह व व्यवहार कुशलता जैसे मानवीय गुणों की आवश्यकता होती है। ये गुण मानव के अंदर निरंतर कम होते जा रहे हैं इसलिये यदि हम थोड़ा समय भी राजयोग का अभ्यास करें तो हमारे जीवन में कई ऐसे गुण आएंगे जो हमें सुख-शांति की अनुभूति भी कराएंगे व एक निश्चित सफलता की ओर भी ले जाएंगे।

शाजापुर में निकाली 21 मीटर लम्बी चुनरी यात्रा

शिव आमंत्रण, शाजापुर। मध्यप्रदेश के शाजापुर में नवरात्रि पर मालवा कला मंडल द्वारा विशाल चुनरी यात्रा का आयोजन किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारीज़ के स्थानीय सेवाकेंद्र की बीके सदस्यों को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया। कार्यक्रम में सेवाकेंद्र प्रभारी बीके प्रतिभा ने अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए परमपिता परमात्मा द्वारा दिये जा रहे ईश्वरीय ज्ञान के आधार से जीवन संवारने का आह्वान किया। इसके बाद शहर में 21 मीटर लम्बी चुनरी यात्रा निकाली गयी। इस दौरान विधायक अरूण भीमावत, मालवा कला मंडल के संस्थापक शिवाजी सोनी, हिन्दू उत्सव समिति के अध्यक्ष रामू सर्राफ, गौशाला संचालक बालक दास महाराज, अखंड आश्रम के स्वामी विद्यानंद महाराज, महंत ईश्वरदास महाराज एवं अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

शाजापुर में निकाली गई 21 मीटर लम्बी चुनरी यात्रा।

गांधी जयंती पर निकाली गई साइकिल यात्रा

शिव आमंत्रण, चेन्नई। चेन्नई में स्थानीय सेवाकेंद्र द्वारा गांधी जयंती के अवसर पर साइकिल यात्रा निकाली गई जिसका शुभारंभ सूचना एवं प्रचार मंत्री कदंबुर राजू, तमिलनाडु जोन की सर्विस कोआर्डिनेटर बीके बीना, अशोक नगर सेवाकेंद्र संचालिका बीके देवी, अन्ना नगर की बीके रजनी ने हरी झंडी दिखाकर किया। इस रैली में 80 साइकिलों के साथ 100 बीके सदस्यों एवं अन्य लोगों ने शामिल होकर नगर में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचारों को जीवन में धारण करने के लिए जागरूक किया।